ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जून+जुलाई-२०२१

जून-२०२१ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

अङ्ग-अङ्ग से पूज्य पिता के,
निर्मित होती सन्तान।
जैसे होते गुण-कर्म पिता के,
वैसी होती सन्तान।
निज निर्माण प्रथम आवश्यक,
कहते ऋषि महान्।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ११६

दुनियाँ ने है माना
एम.डी.एच. मसालों का है जमाना
एम डी एच मसाले 100 से अधिक देशों को निर्यात किये जाते हैं।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Rajmah masala
Kitchen King
Sambhar
Sabzi masala
DEGGI MIRCH
Shahi Paneer masala
RASOORI METHI
Dal Makhani masala
Chunky Chat masala
Pav Bhaji masala
Chana masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
ESTD. 1919
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

कार्यालय मंत्री
भँवर लाल गर्ग (मो. 7976271159)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२१
ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी
विक्रम संवत् २०७८
दयानन्दाब्द १९७

June+July - 2021

०४ वेद सुधा
०६ अल्लाह की कुरआन में प्रक्षेप (?)
१२ सर्वश्रेष्ठ है स्वयंवर विवाह
१५ योग में विभूति
१८ सफलता में बाधक होता है ......
२१ डर
२३ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०५/२१
२४ धर्मान्तरण का कुचक्र
२७ क्रान्तिवीर अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे
समाचार २९
हलचल ३०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं।सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन	3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १० | अंक - ०२ ०३

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा. लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

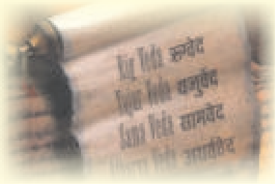

वेद सुधा

ऋग्वेद

तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥ -१०/५३/६

ज्ञान का मूलभूत सारतत्व यही है कि हे मनुष्य तू स्वयं सच्चा मनुष्य बन तथा दिव्य गुणयुक्त सन्तानों को जन्म दे अर्थात् सुयोग्य मानवों के निर्माण में सतत् प्रयत्नशील रह। मनुष्य, मनुष्य तभी बन सकता है, जब उसमें पशुताओं का प्रवेश न हो। आकार, रूप, रंग से कोई प्राणी मनुष्य दिखाई देता है, किन्तु उसके अन्दर भेड़िया, श्वान, उल्लू, गिद्ध आदि आकर अपना डेरा जमा लेते हैं। ऋग्वेद हमें वह सब ज्ञान प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति एक प्रबुद्ध मानव रहता है, वह न पशु और न दानव बनने पाता है।

यजुर्वेद

आयुर्यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहापानो यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा व्यानो यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहोदानो यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा समानो यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा चक्षुर्यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा वाग्यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा मनो यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहात्मा यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा स्वर्यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्पताᳬस्वाहा॥ -२२/३३

सामान्यतया यज्ञ से तीन कर्मों का बोध प्राप्त होता है- देवपूजा, संगतिकरण और दान। सभी चेतन देवताओं के प्रति पूजा-भाव रखते हुए समाज में समन्वय-संगति बनाये रखने के लिए सर्वसुलभ सम्पदाओं को सुविधानुसार दान करना और कराना, यही सब कार्य यज्ञ कहलाते हैं। यही कर्म मनुष्य को महामानव बना देते हैं। आहार, निद्रा, भय व मैथुन तो हर पशु तथा मानव की आवश्यकता है। पशु केवल इन्हीं के लिए जीता है। किन्तु मनुष्य इनसे ऊपर उठता है। इनको भी धर्म के कर्म अर्थात् यज्ञ का रूप प्रदान करता हुआ जीता भी है और बलिदान भी हो जाता है। अगर हमने किसी को प्रेम नहीं दिया, किसी की सेवा नहीं की, किसी की पीठ नहीं थपथपाई, किसी को सहारा नहीं दिया, किसी को सान्त्वना नहीं दी, तो हमारा जीवन व्यर्थ है, निरर्थक है, एक व्यथा है। अयोग्य हैं हम। केवल अपने लिए जी रहे हैं, यह तो पशु का जीवन है। यही पशु प्रवृत्ति है कि केवल अपना ही ध्यान रखे। वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

सामवेद

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ - पू. २/२/८/५, उ. १/१/१२/१

इस यज्ञ भावना, कामना एवं कर्मणा को हम सामवेद के इस उपासना परक मन्त्र से प्राप्त कर सकते हैं। हम सदैव उन व्यक्तियों को अपना मित्र बनायें, जो अपने क्षेत्र में बढ़े हुए हैं, वृद्ध हैं। उनकी सद्संगति से, उनके वचन व उनके अनुकरण से पढ़े-बेपढ़े सभी को सद्ज्ञान-सद्कर्म की प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी। उनके समीप बने रहने से मानव में यज्ञ की विद्युत का प्रवाह संचार करता रहेगा, जो इस लोक में तो उपयोगी होगा ही, परलोक में भी **'सदावृधः'** जो आदि से ही सर्व वृद्धिपूर्ण परमब्रह्म है, उसका भी सखा बना देगा, समान ख्याति का अधिकारी बना देगा। बड़ों की समीपता व उनका सम्मान सदैव आयु, विद्या, यश एवं बल का स्रोत होता है। इससे कोई वंचित न हो, अपितु सब सिंचित हों। यही वेद का मधुर सामगान है।

अथर्ववेद

यत्ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु॥ - १२/१/१२

ज्ञान, कर्म, उपासना इन अवयवों के समन्वित रूप से निर्मित रसायन ही अथर्ववेद का विज्ञान है। सर्वाधिक स्थूल पृथ्वी है, जो सम्पूर्ण प्रकृति का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व करती है। वेद के अनुसार यह हमारी सृजन-पालन व आधार देने वाली माता है, साथ ही हम इसके पुत्र हैं। इसके साथ हमारा व्यवहार माता-पुत्र की भाँति होना चाहिए। माता यदि जन्म देकर सन्तान का पालन पोषण करती है, तो सन्तान भी माता का सम्मान और उसकी सेवा में अपने जीवन की बाजी लगाने को प्रस्तुत रहती है। आज की

भाँति सागर, धरातल, पर्वत, आकाश में पाये जाने वाले पदार्थ यथा रत्न, राशि, जल, वृक्ष-वनस्पति, पत्थर, वायु सभी का भरपूर दोहन करना ही मानव का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। दोहन भी ऐसा कि इन प्राकृतिक पदार्थों का समूल विनाश होता चला जाये तथा पर्यावरण भयंकर रूप से प्रदूषित हो जाए। प्रतिदिन सोने का एक अण्डा देने वाली मुर्गी से सन्तुष्ट न होकर एक बार में ही मुर्गी के पेट को फाड़कर सोने के सारे अण्डे एक साथ निकालने वालों को सोना तो मिलता ही नहीं, मुर्गी से भी हाथ धोना पड़ता है।

अथर्ववेद इस हवस पर नियन्त्रण करके 'वरदा वेदमाता' के ऐसे विज्ञान की प्रेरणा देता है, जिससे मानव को जीते जी आयु, प्राणशक्ति, प्रजा, पशु, कीर्ति एवं ब्रह्मवर्चस्व तो मिलें ही, मरने के बाद ब्रह्मलोक का दिव्य आनन्द भी मिले।

ऋग्वेद के ज्ञान के पदों से धर्म का बोध होता है। यजुर्वेद के कर्म सृजित अर्थ से मिलकर पद से पदार्थ बन जाते हैं। सामवेद की सात्विक कामनाओं से यह पदार्थ जगहितार्थ समर्पित हो जाते हैं। यही समर्पण अथर्ववेद के विज्ञान द्वारा मानव को मोक्ष की ओर अग्रसर कर देता है। इस प्रकार मानव 'धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष' रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान-चार वेदों के ये प्रधान चार विषय हैं, किन्तु सामान्य रूप से चारों वेदों के प्रत्येक मन्त्र में इन विषयों का अनुपम सामंजस्य रहता है। बिना किसी भेदभाव के मनुष्य मात्र स्वसामर्थ्यानुसार 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना' परमधर्म का अनुगमन कर अपने जीवन को देदीप्यमान कर सकता है तथा वेद की 'मनुर्भव' भावना का जीवन्त स्वरूप बन सकता है।

हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय हुई थी।

देश दुनिया में आज वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की ४८१वीं जयन्ती मनाई जा रही है। महाराणा प्रताप की वीरगाथाओं पर चिन्तन और मंथन हो रहा है। ऐसे में महाराणा प्रताप से सम्बन्धित एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय पर हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

उदयपुर के मीरा कन्या महाविद्यालय के प्रोफेसर और इतिहासकार डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा ने वर्ष २००७ में महाराणा प्रताप पर शोध प्रस्तुत किया था। उन्होंने बताया कि हल्दीघाटी का युद्ध अकबर ने नहीं बल्कि महाराणा प्रताप ने जीता था। इसके लिए डॉ. शर्मा ने बाकायदा हल्दीघाटी युद्ध से जुड़े जमीन के पट्टे, ताम्रपत्र और विदेशी इतिहासकारों द्वारा लिखी गई किताबों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया था।

डॉ. शर्मा ने महाराणा प्रताप पर अपनी पहली किताब 'राष्ट्र रत्न' लिखी। इसमें उन्होंने हल्दीघाटी युद्ध से जुड़े पहलुओं को बड़ी बारीकी से जनता के बीच रखा। इसके बाद देश दुनिया के कई इतिहासकारों ने भी शर्मा की बात को स्वीकारा।

महाराणा प्रताप पर हुई रिसर्च में किए गए दावों के बाद प्रदेशभर में शर्मा का अभियान मूर्त रूप लेने लगा। आम से खास सभी महाराणा प्रताप और हल्दीघाटी युद्ध को लेकर इतिहास में बदलाव की मांग करने लगे। सरकार ने राजस्थान विश्वविद्यालय की एकेडमिक काउन्सिल की बैठक में शर्मा के दावों को जाँचा।

रिपोर्ट टीम मंत्रियों की कमेटी ने तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे को सौंपी। इसके बाद २०१७ में तत्कालीन भाजपा सरकार ने न सिर्फ स्कूलों की बल्कि कॉलेज के पाठ्यक्रम में भी बदलाव कर हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की जीत अंकित की। इसके बाद न सिर्फ देश बल्कि दुनियाभर में हल्दीघाटी युद्ध में अकबर की नहीं बल्कि महाराणा प्रताप की जीत दर्शायी गई है।

इतिहासकार डॉ. चन्द्रशेखर के अनुसार देश दुनिया ने अब महाराणा प्रताप को हल्दीघाटी युद्ध में जीता हुआ मान लिया है, बावजूद इसके हल्दीघाटी के समीप बनी रक्ततलाई जहाँ महाराणा प्रताप और अकबर की सेना के बीच युद्ध हुआ था, वहाँ लगे शिलापट्ट पर अकबर को युद्ध में विजय और महाराणा प्रताप को भगोड़ा बताया गया है। ये सबके लिए शर्मनाक है। ऐसे में सत्य इतिहास के प्रकाश में आने के बाद अब उसे शिलापट्ट को बदलने की भी जरूरत है तभी हम शिरोमणि महाराणा प्रताप को सच्ची श्रद्धांजलि दे पायेंगे। नवीनतम समाचार के अनुसार राजसमन्द की विधायक दीपा माहेश्वरी के अनुरोध पर संस्कृति मन्त्री प्रह्लाद पटेल ने रक्त तलाई के उक्त सूचनापट्ट को सही करने के आदेश दे दिए हैं।

साभार- दैनिक भास्कर (राजसमन्द)

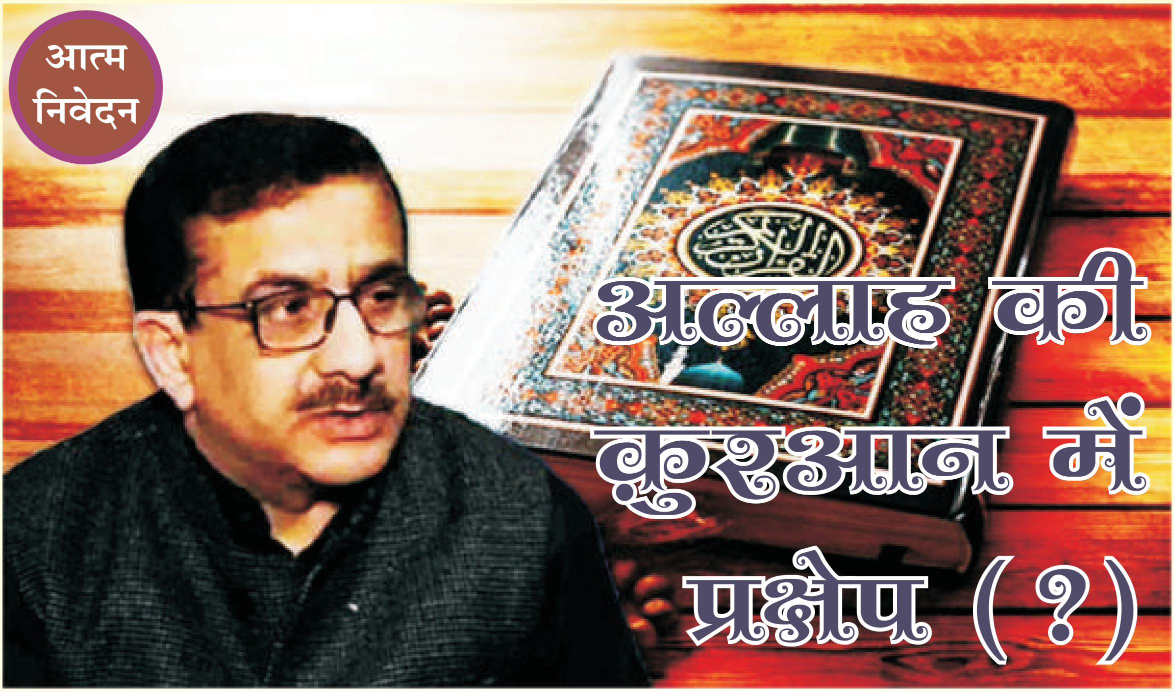

ऐसा संभवतः इतिहास में पहली बार हुआ हुआ है कि किसी मुस्लिम व्यक्ति ने क़ुरान में न केवल ऐसी आयतों की उपस्थिति स्वीकार की जोकि आतंकवाद को बढ़ावा देती हैं वरन् ऐसी २६ आयतों को क़ुरान से हटा देने के लिए भारत के सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की है, जिसमें उच्चतम न्यायालय से यह प्रार्थना की गई है कि क़ुरान में से ऐसी इन २६ आयतों को हटा दिया जाए जो कि चरमपंथ को बढ़ावा देती हैं।

शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष वसीम रिजवी वह शख्स हैं जिन्होंने यह कार्य किया है और सम्पूर्ण मुस्लिम जगत् का विरोध मोल ले लिया, जैसा कि अवश्यम्भावी था। मुस्लिम जगत् में रिजवी के इस कदम की व्यापक प्रतिक्रया हुयी। रिजवी के स्वयं के फिरके 'शिया' में भी कोई उनके साथ नहीं खड़ा। यहाँ तक कि उनके भाई ने भी उनसे नाता तोड़ लिया। रिजवी के खिलाफ कई फतवे भी जारी हो चुके हैं। एक मौलवी साहब ने तो कैमरे के सामने स्पष्ट घोषणा की है कि जो कोई रिजवी का सर कलम करके लाएगा उसे वे ११ लाख रुपये देंगे तो दूसरी ओर एक वकील साहब हैं उन्होंने २१ लाख देने की घोषणा की है। ये सारी प्रतिक्रियाएँ भारतीय मुसलमानों की वर्तमान मनःस्थिति को देखकर स्वाभाविक भी लगती हैं। रिजवी का कहना है कि उन्होंने क़ुरान का गहन अध्ययन किया है और यह २६ आयतें ऐसी हैं जो अल्लाह द्वारा प्रवर्तित नहीं हो सकतीं क्योंकि इनमें स्पष्ट रूप से उस मानसिकता का वर्धन होता है जिससे समाज में द्वेष पनपता है। हिंसा को सहारा देने वाली ये आयतें विश्व में चरमपन्थ का आधार बनी हुई हैं। बच्चे जब मदरसे में इन आयतों को पढ़ते हैं तो उनके अन्दर ऐसी कट्टरता पैदा होती है जो कि उन्हें चरमपन्थ के रास्ते की ओर ले जाती है।

मोटे तौर पर रिजवी का तर्क यह है कि अल्लाह की किताब में परस्पर विरोधी बातें नहीं हो सकतीं। उदाहरण के तौर पर जब पवित्र क़ुरआन में यह आज्ञा दी गयी है कि 'तुम्हारा दीन तुम्हारे साथ हमारा हमारे साथ।' जो कि अत्यन्त उचित है, तो फिर उसी क़ुरआन में कैसे कहा जा सकता है कि मुस्लिम से इतर धर्म वालों को कत्ल कर दिया जाय। रिजवी जोर देते हैं कि– जब पूरे क़ुरान पाक में अल्लाहताला ने भाईचारे, प्रेम, खुलूस, न्याय, समानता, क्षमा, सहिष्णुता की बातें कही हैं, तो इन छब्बीस आयतों में कत्ल व गारत, नफरत और कट्टरपन बढ़ाने वाली बातें कैसे कह सकते हैं?

ये परस्पर विरुद्ध आज्ञाएँ अल्लाह की नहीं हो सकतीं। अतः रिजवी का यह भी कहना है कि मोहम्मद साहब के समय क़ुरान में ये आयतें ऐसी नहीं हुई हो सकती हैं, इन्हें बाद में जोड़ा गया है। उनका कहना है कि अल्लाह ने जिब्रील के द्वारा मुहम्मद साहब के दिल में आयतें उतारी थीं। जो पैग़म्बर से सुनकर अन्य लोगों ने याद कीं। सैयद वसीम रिजवी का मानना है कि पैग़म्बर हजरत मोहम्मद साहब के निधन के बाद पहले खलीफा हजरत अबू बकर ने हफ्ज क़ुरान को किताब की शक्ल में लाने का आदेश दिया। इससे पहले यह मौखिक सन्देश हुआ करते थे। इसकी जिम्मेदारी हजरत के साथ रहे चार लोगों को दी गई

थी। सही अल बुखारी ग्रन्थ के मुताबिक उबे बिन काब, मुआज बिन जबल, जैद बिन ताबित और अबु जैद को ये जिम्मेदारी दी गई। इन चारों में से तीन लोगों ने सर्वसम्मति से क़ुरान की आयतों को संग्रहीत कर लिखने की जिम्मेदारी जैद बिन ताबित को दे दी।

पैग़म्बर मोहम्मद साहब पर अल्लाह द्वारा नाजिल मौखिक सन्देशों को लिखकर क़ुरान का रूप दिया गया। इसे हजरत मोहम्मद की चौथी बीवी और दूसरे खलीफा हजरत उमर की बेटी हफ्सा के हाथों में सौंपा गया। कहा जाता है कि तीसरे खलीफा हजरत उस्मान के जमाने में अलग-अलग लोगों के लिखे करीब तीन सौ क़ुरान शरीफ प्रचलन में थे। तब उन्होंने क़ुरान पाक की मूल प्रति के लेखक हजरत जैद बिन ताबित से कहा कि हजरत हफ्सा से माँग कर मूल किताब की नकल अपने साथियों अब्दुल्ला बिन जुबैर, सैद बिन अलास, अब्दुर्रहमान बिन हारित बिन हिशाम के सहयोग से तैयार की जाएँ।

रिजवी कहते हैं ऐसा नहीं कहा जा सकता कि यह क़ुरआन हूबहू वही थी जो मुहम्मद साहब पर अवतरित हुयी थी। उस वक्त इस्लाम को तलवार के दम पर फैलाने की मुहिम चल रही थी। याचिकाकर्त्ता की दलील है कि उसी समय ये २६ आयतें जोड़ी गईं। इन आयतों में इंसानियत के मूल सिद्धान्तों की अवहेलना और धर्म के नाम पर नफरत, घृणा, खून खराबा फैलाने वाले निर्देश हैं जो अल्लाह की तरफ से हो ही नहीं सकते। उनका कहना है कि तीसरे खलीफा हजरत उस्मान के जमाने में अलग-अलग लोगों के लिखे करीब तीन सौ क़ुरान शरीफ प्रचलन में थे। खलीफा ने हफ्जा के घर से क़ुरआन मंगावाकर उसकी प्रतिलिपि करवाई और अन्य सब संस्करणों को जलवा दिया। रिजवी के कथन का भाव यह है कि उस समय उनका तुलनात्मक विश्लेषण किया जाकर मूल क़ुरआन का निर्णय किया जाना चाहिए था।

जो भी हो इस याचिका के दायर होने के बाद काफी खलबली मच गई। रिजवी के विरोधियों का कहना है कि राजनीतिक लाभ के लिए वसीम रिजवी जब-तब इस प्रकार की बातें कहते रहते हैं। उल्लेखनीय है कि इन्हीं रिजवी ने मुस्लिमों के धार्मिक झण्डे के प्रारूप पर एतराज जताते हुए कहा था कि यह झण्डा तो पाकिस्तान की मुस्लिम लीग से मिलता जुलता है, इस्लाम का झण्डा ऐसा नहीं होना चाहिए। मोहम्मद साहब का झण्डा काला या सफेद था। इन्हीं रिजवी ने यह भी कहा था कि मदरसों को बन्द करके ऐसे विद्यालय खोलने चाहिए जिनमें आधुनिक शिक्षा दी जाए ताकि बच्चों के मस्तिष्क का तार्किक विकास हो सके। प्रायः यह माना जाता है कि मुस्लिम भाई परिवार नियोजन के पक्ष में नहीं हैं परन्तु रिजवी का कहना है कि जानवरों की तरह अधिक बच्चे पैदा करना उचित नहीं है। इस प्रकार अनेक बार इस्लाम की प्रचलित धारा के विरुद्ध बातें कहकर रिजवी सुर्खियों में रहे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु कहा नहीं जा सकता कि यह सब सत्य के प्रति आग्रही होकर अन्तर्मन की आवाज पर कह रहे हैं अथवा तात्कालिक राजनीतिक लाभ और सुर्खियाँ बटोरने के लिए। रिजवी का जो विरोध हो रहा है उसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनकी हयाती कब्र तक को तोड़ दिया गया है। (हयाती कब्र वह कब्र होती है जिसे व्यक्ति अपने जीवन काल में ही अपने पसंदीदा कब्रिस्तान में अपने इच्छित प्रकार से बनवा लेता है। बाद मरने पर, उसी जगह उसे दफना दिया जा सकता है।)

इसमें सन्देह नहीं कि अनेक विद्वानों का यह मत रहा है कि क़ुरान में ऐसी अनेक आयतें हैं जोकि हिंसा और आतंक को बढ़ावा देती हैं परन्तु इस्लामिक जगत् इस आरोप को कभी स्वीकार नहीं करता। ऐसी स्थिति में एक मुसलमान के द्वारा ही न केवल इन आयतों की उपस्थिति को स्वीकार करना बल्कि इनको हटाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर करना इतिहास ही है। यहाँ यह भी उल्लेख करदें कि वसीम रिजवी का कहना है कि हंगामा खड़ा करना उनका उद्देश्य नहीं है इसलिए न्यायालय की शरण लेने से पहले उन्होंने ५७ प्रतिष्ठित संगठनों को ये आयतें तथा अपना पक्ष, उस पर विचार करने हेतु भेजा, पर एक ने भी उसका उत्तर नहीं दिया। तब उनके पास सर्वोच्च न्यायालय जाने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं बचा था।

अब जबकि सर्वोच्च न्यायालय ने न केवल इस याचिका को खारिज कर दिया बल्कि रिजवी पर ₹५०००० का जुर्माना भी लगाया है, इस निर्णय से मौलाना लोग प्रसन्न हैं और उनका कहना है कि रिजवी पर ५०००० नहीं करोड़ों रुपयों का जुर्माना लगाना चाहिए। परन्तु प्रतीत होता है कि इस निर्णय से रिजवी हतोत्साहित नहीं हुए हैं। रिजवी ने अपनी इस बात को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री जी को एक चिट्ठी लिखी है जिसमें उन्होंने लिखा है कि उन्होंने क़ुरान में संशोधन किए हैं

और सभी सूराओं को एक क्रम में लगाते हुए इन २६ आयतों को उसमें से हटा दिया है। उन्होंने प्रधानमंत्री से निवेदन किया है कि वह सभी मदरसों में इसी क़ुरान को जो कि उनके द्वारा सम्पादित की गई है पढ़ाने के निर्देश दें। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् के इतिहास को अगर देखें तो लगता नहीं कि ऐसा कोई आदेश प्रधानमंत्री जी पारित करेंगे परन्तु यह देखने वाली बात होगी कि क़ुरान के एक हर्फ में संशोधन स्वीकार न करने वाले मुस्लिम जगत् में रिजवी द्वारा क़ुरान का सम्पादन किया जाना किस प्रकार लिया जाता है।

सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर कोई टिप्पणी तो करना उचित नहीं है परन्तु यह अवश्य है कि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश महोदय का निर्णय अन्तिम ही है, जब तक कि रिजवी बड़ी बेंच का रुख नहीं करते। हमें यहाँ यह आश्चर्य अवश्य होता है कि सबरीमला तथा उपनिषद् प्रार्थना के विषय पर इन्हीं न्यायाधीश महोदय का रुख भिन्न क्यों था?

पाठकों को स्मरण होगा हमने एक संपादकीय 'प्रार्थना हाजिर हो' में लिखा था कि किस प्रकार उपनिषद् आदि शास्त्रों के सुभाषित वाक्यों को केन्द्रीय विद्यालय में बोलने के विरोध में एक याचिका दायर की गई थी जिसमें सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्रीय विद्यालयों को नोटिस जारी किया था कि इन वाक्यों को प्रार्थना में सम्मिलित करने से परहेज रखें। बता दें 'असतो मा सद्गमय' पर प्रतिबन्ध की बात वहाँ थी। यह वाक्य अथवा प्रार्थना साम्प्रदायिक किस पैमाने पर घोषित की जा सकती है यह मानव विवेक से परे है। पूरा पाठ इस प्रकार है- **'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतम् गमय'** अर्थात् हे प्रभु हम असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर चलें। अब पाठक खुद निर्णय करें कि उक्त भाव पवित्र एवं सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रशस्त हैं अथवा यह कि फिर 'फिर जब हराम (पवित्र) के महीने बीत जाएँ तो मुशरिकों को जहाँ पाओ मारो, उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और घात लगाने वाली जगह पर उनकी घात लगाकर बैठो, फिर यदि वे तौबा कर लें, नमाज कायम करें, और जकात दें तो उनका रास्ता छोड़ दो निश्चय ही अल्लाह बड़ा दयालु और क्षमावान है' (क़ुरान सूरा ९, आयत ५) पवित्र है? एक बच्चा भी इस बात को समझ सकता है इसलिए इसकी विशद् व्याख्या करते हुए न्यायालय की मानसिकता समझने का पाठक स्वयं ही प्रयास कर सकते हैं। जहाँ तक धार्मिक मामलों में दखल न देने की बात कही गई तो उसी नजरिये से सबरीमला मन्दिर में महिलाओं के प्रवेश के मामले में भी यही रुख अपनाया जाना चाहिए था वहाँ पर हस्तक्षेप क्यों किया गया? तो कुल मिलाकर के सर्वोच्च न्यायालय का न्याय भी सदैव निष्पक्ष रूप से प्राप्य रहेगा, यह आवश्यक नहीं है।

जो यह दलील हर बार दी जाती है कि धर्म के मामले में हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता वस्तुतः तो इसके मूल में जो सबसे बड़ी भूल है वह यह है कि धर्म और मजहब को एक मान लिया गया है, यही बात सम्पूर्ण गड़बड़ियों का आधार है। मात्र १४ सौ वर्ष पूर्व लिखी गई अथवा जैसा कहा जाता है अवतरित हुई एक पुस्तक लाखों करोड़ों अरबों वर्ष पुरानी मानवता की रहनुमाई कैसे कर सकती है? यह समझ से परे की बात है। मानवता का इतिहास इससे कहीं अधिक प्राचीन है।

यहाँ पाठकों की जानकारी के लिए लिख दें तो अनुचित न होगा कि १९८५ में कलकत्ता हाईकोर्ट में दो वकीलों ने भी कुछ ऐसी ही माँग रखी थी जिसका जिक्र सीताराम जी गोयल ने अपनी पुस्तक में किया है। उस समय पश्चिम बंगाल में कम्युनिस्ट सरकार थी जिसने हलफनामा देकर याचिका का विरोध किया और भारत सरकार ने भी ऐसा ही हलफनामा दिया- कहा कि क़ुरआन में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। यह याचिका विभिन्न खंडपीठों से होती हुयी निरस्त हो गयी। इस याचिका में २४ या २६ नहीं बल्कि १७८ आयतों पर प्रश्नचिह्न लगाया था। यहाँ सम्पूर्ण क़ुरआन पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग की गयी थी। जिज्ञासु पाठकों को अन्तर्जाल (Internet) पर यह पूरा केस पढ़ना चाहिए। उन्हें चांदमल चोपड़ा बनाम पश्चिम बंगाल सरकार के नाम से मिल जाएगा।

१९८६ में एक और घटना हुयी। दो व्यक्तियों इन्दर सेन शर्मा और राज कुमार आर्य ने २४ आयतों का एक पोस्टर छपवाया जिसका आशय यही था कि ये पूरी तरह हिंसा फैलाती हैं। उन दोनों व्यक्तियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री जेड. एस. लोहाट ने मामले को सुना। उन्होंने लिखा कि मैंने इन २४ आयतों को क़ुरआन से मिलाया तो उसमें वे

इसी रूप में पायी जाती हैं। उन्होंने कहा कि क़ुरान मजीद की पवित्र पुस्तक के प्रति आदर रखते हुए इन आयतों के सूक्ष्म अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ये आयतें बहुत हानिकारक हैं और घृणा की शिक्षा देती हैं। जिनसे एक तरफ मुसलमानों और दूसरी ओर देश के शेष समुदायों के बीच मतभेदों के पैदा होने की सम्भावना है। इसके साथ ही उन्होंने दोनों व्यक्ति को बरी करते हुए मामले को खारिज कर दिया। अगर मुझे सही स्मरण है तो आर्यसमाज के श्री विमल

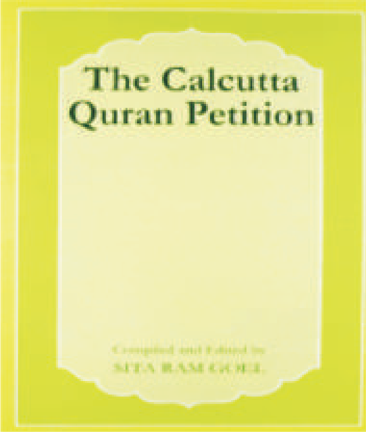

वधावन एडवोकेट ने इसमें बचाव का पक्ष रखा था। आश्चर्य की बात यह है कि श्री जेड. एस. लोहाट के इस निर्णय के विरुद्ध न तो वादी मुस्लिम साहिबान और न ही सरकार, किसी ने अपील में जाना उचित समझा। इसके भी निहितार्थ समझे जा सकते हैं।

उधर ऑल इण्डिया शिया पर्सनल ला बोर्ड के महासचिव यासूब अब्बास का कहना है कि क़ुरान ए पाक अल्लाह की किताब है और कयामत तक यह एक ही रहेगी। हमारा कहना है कि इस्लाम का मानना है कि क़ुरान तो जन्नत में पूरी लिखी हुई रखी है धरती पर जो क़ुरान है वह समय-समय पर आसमानी क़ुरान में से अल्लाह द्वारा मोहम्मद साहब को प्रेषित आयतों का संकलन है अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि मोहम्मद साहब के निधन के पश्चात् आज तक किसी के ऊपर कोई आयत अवतरित नहीं हुई। वस्तुतः इस्लाम का मानना तो यह है कि मोहम्मद साहब अन्तिम पैग़म्बर थे अतः उनके पश्चात् कोई पैग़म्बर ही नहीं हुआ तो किसी आयत के अवतरित होने का कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह अवश्य उपस्थित होता है कि जो आसमानी क़ुरान की किताब है क्या वह सारी की सारी मोहम्मद साहब के जिन्दा रहते हुए अवतरित हो गई थी या आसमानी किताब में अभी और आयतें बाकी हैं जो धरती पर किसी के माध्यम से अभी नहीं आ सकीं क्योंकि नवी का निधन हो गया? ऐसी स्थिति में क़ुरान को पूर्ण नहीं माना जा सकता। विशेष रूप से यह भी ध्यान रखने योग्य है कि क़ुरान की अंतरसाक्षी यह बताती है कि जैसे-जैसे मोहम्मद साहब को आवश्यकता होती रही वैसे-वैसे ही आयतें उतरती रहीं अतः कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मोहम्मद साहब के निधन के कारण आसमानी क़ुरान में अभी और आयतें शेष रह गई हों और यह भी कि जैसा इस्लामिक सिद्धान्त है कि नयी आयत उसी सन्दर्भ की यदि कोई पुरानी आयत है तो उसे निरस्त कर देती है, ऐसी स्थिति में कौन जाने कि यदि आसमानी क़ुरआन में अभी और आयतें शेष रह गयी हैं तो इस संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि उनमें से कोई किसी (कौनसी?) पुरानी आयत को निरस्त कर देती और वह अमान्य हो जाती।

जैसा यासूब अब्बास जी और सभी मुसलमान बन्धु मानते हैं कि क़ुरआन अल्लाह की किताब है तो अनेक विद्वानों का मानना है कि क़ुरान ईश्वरीय पुस्तक है ऐसा क़ुरान के गहन अध्ययन के पश्चात् प्रतीत नहीं होता।

कुछ हदीसों को उद्धृत करते हुए इस बात में भी सन्देह किया गया है कि लिखित क़ुरआन क्या हूबहू वही है जो अल्लाह ने मुहम्मद साहब को भेजी थी या उसमें मुहम्मद साहब ने भी कुछ परिवर्तन किये? बुखारी जो कि मुस्लिम जगत् में सर्वाधिक प्रामाणिक हैं उसकी एक हदीस (Volume 6, Book 61, 512 Number) विचारार्थ यहाँ प्रस्तुत है।

Narrated Al-Bara:There was revealed: 'Not equal are those believers who sit (at home) and those who strive and fight in the Cause of Allah.' (4.95) अर्थात् आयत अवतरित हुयी - विश्वासियों में भी वे बराबर नहीं हैं जो चुपचाप अपने घरों मे बैठे रहे और वे जो अल्लाह की राह में भूखे रहे और लड़े (४.९५)

The Prophet said, "Call Zaid for me and let him bring the board, the inkpot and the scapula bone (or the scapula bone and the ink pot)."' Then he said, "Write: 'Not equal are those Believers who sit..", and at that time 'Amr bin Um Maktum, the blind man was sitting behind the Prophet . He said, "O Allah's Apostle! What is your order For me (as regards the above

Verse) as I am a blind man?" So, instead of the above Verse, the following Verse was revealed: 'Not equal are those believers who sit (at home) except those who are disabled (by injury or are blind or lame etc.) and those who strive and fight in the cause of Allah.' (4.95)

अगर हदीस की मानें तो स्पष्ट है कि आयत में परिवर्धन हुआ। वह जब अन्धे व्यक्ति ने अपनी मजबूरी का ध्यान दिलाया। उनको और विकलांगों को सम्मिलित कराने सम्बन्धी परिवर्धन हुआ। तो सम्पूर्ण कुरान को लौह महफूज वाली ईश्वरीय कैसे कहा जा सकता है।

आर्य समाज के विख्यात् शास्त्रार्थ महारथी और क़ुरआन व इस्लामी साहित्य के असाधारण ज्ञाता पण्डित देवप्रकाश जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'क़ुरआन समीक्षा' में लिखा है- यह मान्यता गलत है कि सम्पूर्ण क़ुरआन जिब्रील लाया। वे लिखते हैं-

तफसीर इत्तिकान में पृष्ठ ११८ प्रकरण १६ में मेराज की रात की कथा है। अहमद आदि ने अकबह बिन आमर से मरफूअ (प्रमाणित) तौर पर रवायत की है कि रसूल सल्लअम ने कहा कि तुम दोनों बकर की अन्तिम आयतों को पढ़ा करो क्योंकि खुदा ने यह दोनों अर्श अर्थात् सिंहासन के नीचे के कोष से मुझे प्रदान की हैं कहा यह बकर की अन्तिम आयतें अर्श के नीचे के खजाने से मुझे मिली हैं।

इसी प्रकार हजरत अली ने कहा की आयतुल कुर्सी तुम्हारे नवी हजरत मोहम्मद को अर्श के नीचे के खजाने के नीचे से प्रदान हुई थी (तफसीर इत्तेकान प्रकरण १५ पृष्ठ १००)।

पंडित देव प्रकाश जी लिखते हैं कि मुस्लिम विद्वानों का सर्वसम्मति से इस बात पर विश्वास है कि आयतुल कुर्सी और बकर की अंतिम आयतें खुदा ने स्वयं हजरत मोहम्मद को प्रदान की। इस स्थिति में यह सिद्ध हुआ कि न यह लौह महफूज में थी और न जिब्रील ही इनको आसमाने दुनिया पर लाया।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में क़ुरान की सामग्री पर निष्पक्ष रूप से विचार किया है। उन्होंने ईश्वरीय ग्रन्थ की कसौटियाँ प्रस्तुत की हैं जोकि अत्यन्त उचित हैं। उन सब की विशद् व्याख्या करते हुए क़ुरान को उस पर कसने का स्थान यहाँ नहीं है, परन्तु सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने से यह सुनिश्चित हो जाता है की क़ुरान अल्लाह की पुस्तक नहीं है। महर्षि दयानन्द सूरत फातिहा की आयत १ और २ को उद्धृत करते हुए, जिसमें कि लिखा है परमेश्वर सब संसार का पालन करने वाला है, लिखते हैं जो क़ुरान का खुदा संसार का पालन करने हारा होता और सब पर क्षमा और दया करता होता तो अन्य मतवाले और पशु आदि को भी मुसलमानों के हाथ से मरवाने का हुक्म ना देता क्योंकि उक्त आयतों में अल्लाह को क्षमा करने वाला और दयालु बताया है। तो महर्षि लिखते हैं कि काफिरों को कत्ल करने की आज्ञा क्यों दी गई? हम देखते हैं कि यह अकाट्य तर्क है और यह तो केवल नजीर मात्र है। सत्यार्थ प्रकाश में विस्तार से जो लिखा गया है उसे पढ़कर निष्पक्ष विद्वान् मनुष्य अवश्य समझ जाएगा कि क़ुरान अल्लाह कृत नहीं है।

यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि वसीम रिजवी स्वयं शिया मुसलमान हैं और उनका यह कहना है कि तीसरे खलीफा के सम्पादन के समय में इसमें काफी छेड़छाड़ कर दी गई और यह २६ आयतें हैं जोकि आतंकवाद को बढ़ावा देती हैं, उसी समय में जोड़ी गई हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि ऐसी आयतों की संख्या केवल २६ नहीं १७८ से ऊपर है।

क्या धार्मिक ग्रन्थों में प्रक्षेप होता है इस पर संक्षेप में प्रकाश डाल अपनी बात को समाप्त करेंगे। महर्षि दयानन्द का मत है कि अपौरुषेय वेद को छोड़ प्रायः अन्य सभी शास्त्रीय ग्रन्थों में स्वार्थी मनुष्यों द्वारा जी भर कर ग्रन्थकार की भावना के विरुद्ध प्रक्षेप किये हैं चाहे वे स्मृतियाँ हों अथवा रामायण, महाभारत जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थ। मनुस्मृति ऐसे प्रक्षेपों का ज्वलन्त उदाहरण है। विवेकपूर्वक इन प्रक्षेपों को चिह्नित कर उन्हें दूर करना उस ग्रन्थ की अवमानना नहीं वरन् उसकी अस्मिता के संरक्षण का पवित्र कार्य है। क्योंकि देखा यही गया है कि ऐसे प्रक्षेप अमानवीय ही होते हैं और कुछ व्यक्तियों के स्वार्थ सिद्धि का साधन होते हैं। प्रत्येक पवित्र पुस्तक से ऐसे अमानवीय प्रक्षेपों को जिनका अनुसरण मनुष्य को असमानता तथा नैतिक पतन की ओर धकेलता है, शीघ्रातिशीघ्र दूर करना प्रत्येक विवेकशील मानव का कर्तव्य है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

१५

ऊखी मठ की गद्दी का प्रलोभन

स्वामी जी का आगे का जीवन अत्यन्त कष्टपूर्ण रहा। ऐसी परिस्थितियों में सुविधायुक्त जीवन का प्रलोभन साधारण मनुष्य को कर्तव्यच्युत कर देता है। परन्तु दयानन्द साधारण नहीं थे। ऊखी मठ के महन्त ने जब दयानन्द को अपने पश्चात् मठाधीश बनाने का प्रलोभन दिया तो स्वामी जी ने उसे विनम्रतापूर्वक ठुकरादिया। युवा संन्यासी का उत्तर था- 'मैं सत्य योगविद्या और मोक्ष चाहता हूँ और जब तक यह अर्थ सिद्ध नहीं होगा तब तक बराबर अपने देशवालों का उपकार, जो मनुष्य पर कर्तव्य है करता रहूँगा।'

सर्वश्रेष्ठ है स्वयंवर विवाह

वस्तुतः विवाह का मुख्य प्रयोजन सुसन्तान की उत्पत्ति है। यह कार्य महर्षि दयानन्द के मतानुसार तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि माता विदुषी न हो। **'माता निर्माता भवति' को सार्थक करने के लिए माता का शिक्षित और योग्य होना आवश्यक है।** सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में महर्षि माता और पिता दोनों में ही उत्तम गुणों की विद्यमानता का समर्थन करते हुए लिखते हैं-

'वह कुल धन्य! वह संतान बड़ा भाग्यवान जिस के माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता संतानों पर प्रेम उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता इसलिए (मातृमान) अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्'** धन्य वह माता है जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या ना हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे। (सत्यार्थप्रकाश द्वितीय समुल्लास)

अनेक बार लोक में हम देखते हैं कि कन्या के तो रूप पर अत्यन्त बल दिया जाता है जबकि वर के लिए समझा जाता है कि यह गुण आवश्यक नहीं है, परन्तु वेद 'रूप' में भी तुल्यता का उपदेश करता है।

प्र सू महे सुशरणाय मेधां गिरं भरे नव्यसीं जायमानाम्।
य आहना दुहितुर्वक्षणासु रूपा मिनानो अक्रृणोदिदं नः॥

- ऋग्वेद ५/४२/१३

हे मनुष्यों! समान रूपवाली कन्या को देखके ही उसके सदृश पति कराने के समान बुद्धि और शिक्षित वाणी को बढ़ाय के गृहाश्रम से उत्पन्न हुए सुख को सब मनुष्यों के लिये आप लोग प्राप्त कराओ।

अर्थात् अत्यन्त आवश्यक है कि वर-वधू में गुणों की तुल्यता हो। इसमें माता-पिता, आचार्य तथा समाज के अनुभवी लोग सहायक हों, क्योंकि यही तुल्यता गृहस्थ में सुख का आधार है।

यद्यपि धन की प्रचुरता व महत्ता वाले इस युग में माता-पिता की बात तो छोड़ दीजिये स्वयं विवाह योग्य कन्याएँ भी पुरुष में अन्य कमी सहने को तैयार हो जाती हैं शर्त एक ही रहती है कि लड़का प्रचुर धन कमाता हो। इस कामना को गलत तो नहीं कहा जा सकता है क्योंकि धन भी गृहस्थ में सुख और गृहस्थ के कर्तव्यों के निर्वहन में महती भूमिका रखता है, फिर भी समानता की बात आती है तो **सभी गुणों में एक आदर्श संतुलन होना समीचीन है।**

वेद भगवान अत्यन्त स्पष्टता के साथ उपदेश कर रहे हैं-

उत मेऽरपद्युवतिर्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम्।
वि रोहिता पुरुमीळ्हाय येमतुर्विप्राय दीर्घयशसे॥

-ऋग्वेद ५/६१/९

जो स्त्री-पुरुष परस्पर तुल्य गुण, कर्म और स्वभाववाले हों तो श्रेष्ठ मार्ग, अत्यन्त कीर्ति और आनन्द को प्राप्त हों।

महर्षि दयानन्द तो यहाँ तक लिखने में संकोच नहीं करते हैं कि अगर समान गुण-कर्म-स्वभाव न मिलें और वे परस्पर विरुद्ध हों तो जीवन भर अविवाहित रहना अच्छा है। देखें-

काममामरणात्तिष्ठेद् गृहे कन्यर्तुमत्यपि।
न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित्॥ - मनु.९/८९

चाहे लड़का-लड़की मरणपर्यन्त कुमारे रहैं परन्तु असदृश

अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिये।

यहाँ प्रसंग उपस्थित है स्वयंवर का अर्थात् लडके-लड़कियों को अपना साथी चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए अथवा नही। इस प्रश्न के उत्तर में आज से १५० वर्ष पूर्व प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुरक्त आचार्य दयानन्द लिखते हैं कि स्वयंवर विवाह ही होने चाहिए।

वे सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में स्पष्ट लिखते हैं-

(प्रश्न) 'विवाह माता-पिता के आधीन होना चाहिये वा लड़का-लड़की के आधीन रहै?

(उत्तर) लड़का-लड़की के आधीन विवाह होना उत्तम है। जो माता-पिता विवाह करना कभी विचारें तो भी लड़का-लड़की की प्रसन्नता के विना न होना चाहिये। क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता है और सन्तान उत्तम होते हैं। अप्रसन्नता के विवाह में नित्य क्लेश ही रहता है। विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है माता-पिता का नहीं। क्योंकि जो उनमें परस्पर प्रसन्नता रहे तो उन्हीं को सुख और विरोध में उन्हीं को दुःख होता।'

यहाँ यह अवश्य लिख देना चाहेंगे कि आजकल शारीरिक आकर्षण और धन के प्रभाव के वशीभूत होकर माता-पिता से छिपाकर, गुपचुप रूप से जो विवाह हो रहे हैं ऋषि दयानन्द उसका समर्थन नहीं कर रहे हैं। क्योंकि प्रथम तो वे स्वमन्तव्यामन्तव्य में विवाह की परिभाषा में ही इसका प्रसिद्धि से होना लिख रहे हैं। देखिये-

'विवाह'- जो नियमपूर्वक प्रसिद्धि से अपनी इच्छा करके पाणिग्रहण करना वह 'विवाह' कहाता है।

इसमें भी जब गुण-कर्म-स्वभाव की अनिवार्यता, वासनाओं पर नियंत्रण और विवाह पूर्व अखण्ड ब्रह्मचर्य होने की बात जोड़ देते हैं तो विश्लेषण करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि महर्षि दयानन्द लड़के-लड़की की प्रसन्नता को प्रमुख मानते हुए उसमें माता-पिता की सम्मति और प्रसन्नता का स्वागत करते हुए एक ऐसे गृहस्थ की नींव की स्थापना चाहते हैं जहाँ निम्न वेदमंत्र साकार हो उठे-

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवान्॥

यह अथर्ववेद के काण्ड ३ सूक्त ३० का दूसरा मन्त्र है। पंडित क्षेमकरण दास त्रिवेदी इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं-

सन्तान माता-पिता के आज्ञाकारी, और माता-पिता सन्तानों के हितकारी, पत्नी और पति आपस में मधुरभाषी तथा सुखदायी हों। यही वैदिक कर्म आनन्दमूल है।

उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय॥

- ऋग्वेद ६/६४/६

इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो वधू और वर स्वयंवर विवाह से परस्पर प्रसन्न होकर विवाह करते हैं, वे सूर्य्य और उषा के समान गृहाश्रम को उत्तम आचार से अच्छे प्रकार प्रकाशित कर सर्वदा आनन्दित होते हैं।

(आचार्य दयानन्द कृत भाष्य)

स्वयंवर विवाह से आनन्द के समर्थन में कुछेक वेदमंत्र और द्रष्टव्य हैं-

महर्षि दयानन्द स्वयंवर विवाह के पक्ष में यजुर्वेद के बीसवें अध्याय के ४०वें मंत्र को प्रस्तुत करते हुए उसका भाष्य करते हुए लिखते हैं कि- 'जिस कुल वा देश में परस्पर प्रीति से स्वयंवर विवाह करते हैं वहाँ मनुष्य सदा आनन्द में रहते हैं।'

इसी प्रकार यजुर्वेद के ही २३वें अध्याय के ३७वें मंत्र का भाष्य करते हुए ऋषि लिखते हैं- 'हे मनुष्यो! जो विद्या और अच्छी शिक्षा से युक्त आप विवाह को प्राप्त स्त्री-पुरुष अपनी इच्छा से एक दूसरे से प्रीति किए हुए विवाह को करते हैं, वे लावण्य अर्थात् अतिसुन्दरता, गुण और उत्तम स्वभावयुक्त संतानों को उत्पन्न कर सदा आनन्दयुक्त होते हैं।'

भारतीय इतिहास में भी चाहे सीता स्वयंवर हो अथवा द्रौपदी का, हमें स्वयंवर विवाह की प्रधानता मिलती है। स्वयंवर विवाह का महर्षि दयानन्द ने भी अत्यन्त बल के साथ समर्थन किया है। अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में वे जो लिखते हैं। वे उद्धरण द्रष्टव्य हैं-

'इसलिये जैसी स्वयंवर की रीति आर्यावर्त्त में परम्परा से चली आती है वही विवाह उत्तम है।

महर्षिवर आगे लिखते हैं-

जब तक इसी प्रकार सब ऋषि-मुनि राजा महाराजा आर्य लोग ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़ ही के स्वयंवर विवाह करते थे तब तक इस देश की सदा उन्नति होती थी। जब से यह ब्रह्मचर्य से विद्या का न पढ़ना, बाल्यावस्था में पराधीन अर्थात् माता पिता के आधीन विवाह होने लगा तब से क्रमशः आर्यावर्त्त देश की हानि होती चली आई है। इस से इस दुष्ट काम को छोड़ के सज्जन लोग पूर्वोक्त प्रकार से स्वयंवर विवाह किया करें।

चतुर्थ समुल्लास के समापन पर दयानन्द पुनः चेताते हैं -

इसलिये गृहाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रह्मचर्य और पूर्वोक्त स्वयंवर विवाह है।

और तो और सत्यार्थ प्रकाश के ही ग्यारहवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द एक प्रकरण में यूरोपियनों की प्रशंसा भी करते हैं तो उनकी उन्नति के कारणों में एक स्वयंवर भी मानते हैं, यह प्रकरण देखने योग्य है। वे लिखते हैं-

जो यूरोपियनों में बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का-लड़की को विद्या सुशिक्षा करना कराना, स्वयंवर विवाह होना, बुरे-बुरे आदमियों का उपदेश नहीं होता। वे विद्वान् होकर जिस किसी के पाखण्ड में नहीं फंसते जो कुछ करते हैं वह सब परस्पर विचार और सभा से निश्चित करके करते हैं। अपनी स्वजाति की उन्नति के लिये तन, मन, धन व्यय करते हैं। आलस्य को छोड़ उद्योग किया करते हैं। ....'

अब इस विषय पर लेखनी को विराम देते हुए आजकल लड़का-लड़की की स्वतंत्रता के नाम पर जो उच्छृंखलता का प्रसार हो रहा है उसका समर्थन दयानन्द या भारतीय मनीषा नहीं करती, यह स्पष्ट कर देना उचित समझते हैं। ऐसे विवाहों का प्रायः शीघ्र अन्त हो जाता है। और एकाकी अभिभावक का पालन-पोषण कभी पूर्ण नहीं होता और सन्तान में हीन ग्रन्थि उत्पन्न होने की सम्भावना बढ़ जाती है। महर्षि दयानन्द निम्न वेदमंत्र का भाष्य करते हुए स्पष्ट रूप से इस पर ईश्वराज्ञा को प्रकट करते हैं-

अग्ना३ ।।ऽइ पत्नीवन्त्सजूर्देवेन त्वष्ट्रा सोमं पिब स्वाहा । प्रजापतिर्वृषासि रेतोधा रेतो मयि धेहि प्रजापतेस्ते वृष्णो रेतोधसो रेतोधामशीय।। - यजुर्वेद ८/१०

विवाह की मर्यादा ही से सन्तानों की उत्पत्ति और रतिक्रीड़ा से उत्पन्न हुए सुख को प्राप्त होकर नित्य आनन्द में रहें। बिना विवाह के स्त्री-पुरुष वा पुरुष-स्त्री के समागम की इच्छा मन से भी न करें।

यहाँ स्वयं ईश्वर उन्मुक्त पशुवत यौन सम्बन्धों का निषेध कर रहे हैं। मानव समाज को इस मर्यादा का पालन करना अत्यन्त उचित है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

श्री माणक आर्य का निधन

आकाशवाणी के पूर्व उप महानिदेशक श्री माणिक आर्य का कोरोना के कारण गत दिनों निधन हो गया। श्री माणिक आर्य हमारे प्रति आत्मीयता रखते थे और न्यास के कार्यों के प्रति उनका सदा ही सकारात्मक रुख रहता था। हम उनके परिवार के प्रति अपनी ओर से और न्यास की ओर से संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं। - भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

योग शब्द 'युजिर् योगे' 'युज समाधै' इन धातुओं से निष्पन्न होता है किन्तु वर्तमान समय में ही नहीं अपितु पहले भी योग शब्द के अनेक अर्थों में प्रयोग देखे जाते हैं किन्तु सबका उद्देश्य एक ही है- 'मन की एकाग्रता।' इसी बात को महर्षि पतंजलि ने अपने योगदर्शन में, किसी को योग के सम्बन्ध में भ्रान्ति न हो, इसलिए द्वितीय सूत्र में ही कहा-

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'। - योगदर्शनम् १/२

चित्तवृत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों ने यह निश्चय किया है कि यहाँ चित्त शब्द से मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इस अन्तःकरण चतुष्टय वृत्ति का ग्रहण होता है। इनके निरुद्ध होने पर क्या लाभ होता है? इसको महर्षि पतंजलि ने जिज्ञासु की जिज्ञासा का समाधान करते हुए तत्काल बता दिया कि

'तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्।। - योग.१/३

अर्थात् योगसिद्ध होने पर जीवात्मा का परमात्मा में अवस्थान या वृत्तियों से रहित होकर अपने में अवस्थान होता है और अपने में अवस्थान होने का लाभ क्या है? इसको भी उन्होंने बतला दिया कि वृत्तियाँ जो पाँच प्रकार की हैं- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति। (योगदर्शन १/६)

इनके नाश होने पर या इनके यथार्थ ज्ञान होने पर अथवा अवरुद्ध होने पर अनेक उपलब्धियाँ साधक को प्राप्त होती हैं। उन वृत्तियों के निरोध के अनेक उपाय समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्यपाद में दर्शाये गये हैं। साधक धैर्य से इनमें से किसी भी मार्ग का अवलम्बन कर परमात्मा में अवस्थित हो सकता है। अवस्थित हो जाने पर वृत्तिजन्य सभी क्लेश समाप्त हो जाते हैं।

योग के उन्होंने आठ अंग बतलाए हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धरणा, ध्यान, समाधि। (योग. २/२६)

जिस प्रकार यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार इन बहिरंग योग के साधकों को लाभ प्राप्त होता है। उसी प्रकार धारणा, ध्यान आदि से भी जो लाभ होता है उसका भी दिग्दर्शन कराया। अन्त में समाधि से जो आन्तरिक लाभ अर्थात् जो योग का उद्देश्य है- 'स्वरूप में अवस्थित होना' वो प्राप्त करता है। जिसका निर्देश आचार्य ने अपने योगदर्शन के चतुर्थ पाद के अन्तिम सूत्र में ही कह दिया और अन्त में कैवल्य पाद में स्पष्ट कहा कि -

पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति। - योग. ४/३४

जब साधक समाधि की अवस्था में धीरे-धीरे प्रवेश करता है, तो उसे अनेक प्रकार के समाधिजन्य फलों की अवाप्ति होती है। जिसे योग में विभूति के नाम से कहा जाता है। साधक जब इस समाधि की अवस्था में प्रवेश करता है, तो जैसे भौतिक पदार्थों की साधना में या अन्वेषण में उसे अनेक फल प्राप्त होते हैं, ठीक उसी प्रकार से समाधि-अवस्था के साधना में भी अनेक लाभ होते हैं। जिसका दिग्दर्शन महर्षि ने तृतीय पाद, चतुर्थ पाद में कराया है। यह साधक के उपर निर्भर करता है कि उसकी साधना मृदु, मध्य या तीव्र है। महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में कहा है कि- 'तीव्रसंवेगानामासन्नः' अर्थात् तीव्र संवेग वाले साधक को शीघ्र ही समाधि एवं समाधिजन्य लाभ प्राप्त होता है। जैसे- 'भौतिक अनुसन्धान में अहर्निश दत्तचित्त संलग्न वाला व्यक्ति शीघ्र लाभ प्राप्त करता है। उसी प्रकार से तीव्रसंवेग वाला साधक समाधि एवं समाधिजन्य लाभ को प्राप्त करता है। इसमें साधक की

जन्म-जन्मान्तर की साधना जहाँ सहायक होती है उसमें इस जन्म का अध्यवसाय भी क्षिप्रकारी होता है।

आज ही नहीं पहले भी कुछ लोग योग के आठ अंगों में से किसी अंगविशेष की साधना को ही योग मानते या प्रसारित करते हैं। उसी प्रकार आज भी लोग अंगविशेष की साधना को ही योग प्रख्यापित करते हैं तथा समाज में उसका प्रचार-प्रसार करते हैं। जिस प्रकार आम्रवृक्ष है, उसके अंग जड़, तना, फूल, पत्ती और फल, ये सभी अङ्गाङ्गभाव से आम्रपदवाच्य हैं। आम्र का मूल, उसका तना, आम्र की शाखा, आम्र की पत्ती, आम्र का फूल, आम्र का फल ये सब मिलकर आम्र हैं। इस प्रकार से महर्षि का कथन है कि आठों अंग मिलकर ही योगपद-वाच्य होते हैं। अब साधक अपनी साधना से कहाँ तक पहुँचता है, यह उसके अध्यवसाय एवं प्रतिभा पर निर्भर करता है।

समाधि की साधना से जो साधक को ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं कुछ स्वाभाविक रूप से, कुछ उस विशेष वस्तु की साधना से। उनका वर्णन भी उन्होंने किया और ये ही उपलब्धियाँ साधक का लक्ष्य नहीं हैं किन्तु ये मार्ग में आती ही हैं। और पहले भी यह भ्रम रहा है कि योग की जो सिद्धियाँ हैं, जिसे योग की भाषा में विभूति कहते हैं वे यथार्थ हैं या नहीं? तो महर्षि कपिल ने सांख्य में दृढ़तापूर्वक कहा है कि-

योगसिद्धयोऽप्यौषधादिसिद्धिवन्नापलपनीयाः।

अर्थात् जिस प्रकार से सुयोग्य चिकित्सकों द्वारा निर्मित औषधियों से अनेक असाध्य रोग यहाँ तक कि मरणासन्न रोगी भी स्वस्थ हो जाता है; जैसे आज भौतिक वैज्ञानिकों द्वारा कोबरा नाग-जैसे विषैले जन्तुओं के विष से अनेक जीवन प्रदायिनी औषधियों का निर्माण हो रहा है, महर्षि पतंजलि एवं कपिल मुनि की भाषा में इसे सिद्धि या विभूति कह सकते हैं ठीक उसी प्रकार से योग की सिद्धियों का भी अपलाप नहीं किया जा सकता अर्थात् उनको अस्वीकार नहीं किया जा सकता ।

महर्षि चरक ने अपने चरकसंहिता में लिखा है।

पुरुषोऽयं लोकसंवितः, लोकसंवितोऽयं पुरुषः।

अर्थात् जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वह मात्रा के अनुरूप में सभी शरीर में है। या जो कुछ शरीर में है वही लोक अर्थात् ब्रह्माण्ड में है। इसी भाव को लेकर विद्वानों में यह उक्ति प्रचलित हुई **'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे'** जिस प्रकार भौतिक ब्रह्माण्ड के पदार्थों का अनेक प्रकार से परिष्कार कर अनेक अद्भुत कार्य किये जाते हैं जैसे आज ऐसे यन्त्र का आविष्कार भौतिक वैज्ञानिकों ने कर लिया है जो अत्यधिक व्यवधान होने पर भी उनकी जानकारी प्राप्त होती है जैसे पृथ्वी में कहाँ क्या है? इसका भौतिक यन्त्र से ऊपर ही ऊपर अर्थात् पृथ्वीतल के ऊपर से ही ज्ञान हो जाता है, अनेक भौतिक व्यवधानों के पश्चात् भी उसके स्वरूप का वास्तविक ज्ञान हो जाता है।

उसी प्रकार योग में भी उन शक्तियों का विकास कर लेने पर सूक्ष्म व्यवधानयुक्त और अत्यन्त दूरी वाली वस्तुओं का

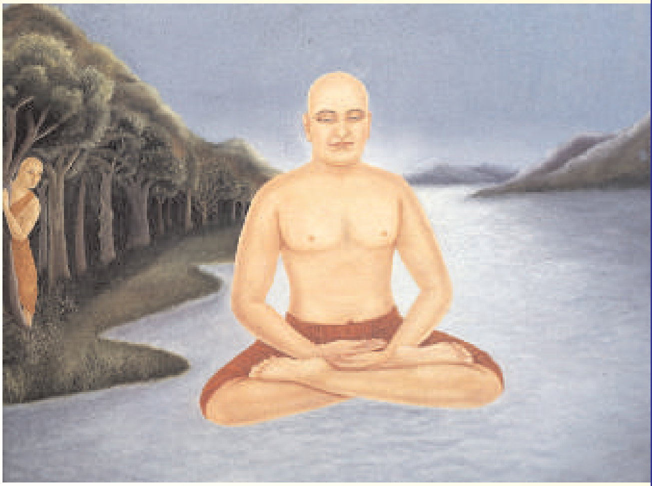

सहज में ज्ञान हो जाता है इसी बात को महर्षि ने अपने योगदर्शन में लिखा-

प्रवृत्त्यालोकन्यासात् सूक्ष्मव्यवहित विप्रकृष्टज्ञानम्।

(योगदर्शन ३/२५)

इस प्रकार की अनेक योग उपलब्धियों को जिनको विभूति नाम से जाना जाता है उन्होंने दर्शाया है। सामान्य रूप से अज्ञ लोग उन विभूतियों को असम्भव तथा जादू-टोना समझते हैं। किन्तु ज्ञानी लोग उन सभी ज्ञान को जानते हुए भौतिक पदार्थों की भाँति प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं। ध्वनि चिकित्सा, मानस चिकित्सा इसके अवप्रत्यक्ष उदाहरण हो गये हैं, यहाँ इसके प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं।

जैसा कि लोक में यह होता ही रहता है कि पुरुषार्थहीन लोग अपनी दुर्बलता को आच्छादित करने के लिए; छिपाने के लिए इन्हें प्रक्षिप्त आदि कहकर इनका अपलाप करते हैं। उनमें दो प्रकार के लोग हैं एक तो वे लोग हैं जो उन ऐश्वर्यों को प्राप्त न करके भी असत्य में ही मुझे प्राप्त हैं इसका मिथ्याप्रदर्शन करते हैं। दूसरे वे लोग हैं जो इनको असत्य कहकर इनका परित्याग कर देते हैं।

महर्षि दयानन्द जी जहाँ मिथ्यावादियों के पाखण्ड का खण्डन करते हैं वहीं सत्य का अनुमोदन करते हैं। उन्होंने अपने यजुर्वेदभाष्य, ऋग्वेदभाष्य में तथा अपने पत्रों में सत्य का

दर्शन कराया है। जैसा- 'देखो पूर्वकाल में हमारे ऋषिमुनियों को कैसी पदार्थविद्या आती थी कि जिससे आत्मा के बल से सबके अन्तःकरण के भेद को शीघ्र ही जान लिया करते थे। जैसे बाहर के पदार्थविद्या से सिद्ध किये हुए रेल, तारादि विद्या को मूर्ख लोग जादू समझते हैं, वैसे ही भीतर के पदार्थों के योग से अनेक कर्म कर सकते हैं। इनमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि मनुष्य लोग जितनी विद्या बाहर के पदार्थों से सिद्ध करते हैं, उससे कई गुना अधिक भीतर के पदार्थों से सिद्ध कर सकते हैं।' (ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन सम्पादक- श्री भगवतदत्त रिचर्स स्कॉलर)

द्वितीय स्थान पर मुम्बई के प्रवचन में पुनः इसी विषय को दृढ़ता से कहते हैं-

'भीतर के पदार्थ बहुत महान् और गुप्त हैं, और उस स्थूल जगत् में जो गुण और चमत्कार देखने में आते हैं, उससे करोड़ों गुने गुण और चमत्कार भीतर विद्यमान हैं। बाहर के चमत्कार इन्द्रियों से ग्रहण करे जा सकते हैं किन्तु मनुष्य स्थिर होकर शोध करे तो उससे बहुत अधिक चमत्कार भीतर के उसे देखने में आयेंगे।'

ऋषि दयानन्द ने बाह्य और स्थूल पदार्थों के गुणों के आविष्कार का जहाँ महत्त्व देखा और समझा, उसी प्रकार से आभ्यन्तर के अर्थात् शरीर के पदार्थों के महत्व को इनके परीक्षणकर्त्ता जिनको योगी कहते हैं उनके महत्त्व को दर्शाया। अब जो लोग उतना श्रम नहीं कर सकते या शीघ्र जनसामान्य में अपने आपको योगी प्रख्यापित करने की भावना से ग्रस्त हैं। वे दोंनो ही सत्य से बहुत दूर हैं, उनके सम्बन्ध में तो यही कहा जा सकता है-

दह्यमानाः सुतीव्रेण नीचाः पर-यशोऽग्निना।
अशक्तास्तत्पदं गन्तुं ततो निन्दां प्रकुर्वते। - चा. नी. १३/१०

या अंगूर ही खट्टे हैं, उस लोमड़ी की भाषा बोलते हैं। हमें योग के श्रेष्ठतम आचार्यों के निर्देशों का पालन करते हुए उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए उनका निरीक्षण एवं परीक्षण करना चाहिए। ऋषियों को मिथ्याचारी, मिथ्यालापी अपनी दुर्बलता को छिपाने के लिए नहीं कहना चाहिए, क्योंकि भविष्य में कुछ अनुसंधानकर्त्ता व्यक्ति योग का अनुष्ठान करके उनका प्रत्यक्षीकरण करेंगे तो इन दोंनों प्रकार के योगियों मिथ्या विभूतिवादियों एवं विभूतियों को मिथ्या कहने वालों पर हँसेंगे। जिस प्रकार भौतिक पदार्थों का परीक्षण-निरीक्षण एक विज्ञान है उसी प्रकार आभ्यन्तरिक पदार्थों का निरीक्षण एवं परीक्षण उस विज्ञान से भी बड़ा विज्ञान है। इति शम्

- स्वामी विवेकानन्द
प्रभात आश्रम

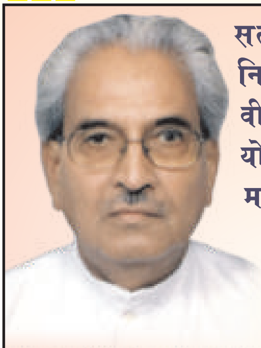

सत्यार्थ प्रकाश भवन में निर्माणाधीन भव्य 'संस्कार वीथिका' हेतु कोलकाता के योगाचार्य श्री ओम प्रकाश मस्करा ने अत्यन्त उदारतापूर्वक ₹५१००० के सात्विक दान की घोषणा की है न्यास की ओर से उनके प्रति आभार।

नोट- जो उदार दानदाता उक्त अद्भुत कार्य की सम्पूर्णता हेतु तीन लाख रुपये प्रदान करेंगे तो एक सम्पूर्ण संस्कार उनके नाम से प्रायोजित हो सकेगा। इस पवित्र अद्भुत व प्रेरक कार्य में सहयोग कर दाता को निश्चित प्रसन्नता होगी इसका हम विश्वास दिलाते हैं।

-अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर

सफलता में बाधक होता है हमारा नकारात्मक विश्वास

हेनरी फोर्ड ने कहा है कि अगर आपको विश्वास है कि आप सफल हो सकते हैं तो आप सही हैं और अगर आपको विश्वास है कि आप सफल नहीं हो सकते तो भी आप सही हैं। हमारा विश्वास ही सफलता प्रदान करता है और हमारा विश्वास ही असफलता प्रदान करता है लेकिन दोनों प्रकार के विश्वासों में अन्तर होता है। एक सकारात्मक विश्वास है तो दूसरा नकारात्मक विश्वास। सकारात्मक विश्वास सफलता प्रदान करने में सक्षम है तो नकारात्मक विश्वास असफलता के लिए उत्तरदायी है। कल आफिस जाने के लिए जैसे ही घर से निकले बरसात हो गई और सारे कपड़े खराब हो गए जिससे दिन भर परेशानी होती रही। लेकिन इसका ये अर्थ तो नहीं कि आज भी वैसा ही होगा या हमेशा ही ऐसा होता रहेगा। क्या ऐसा सोच कर आफिस जाना ही छोड़ दिया जाए? जहाँ प्रायः रोज बारिश होती है वहाँ भी लोग काम पर जाते ही हैं।

एक बार वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया। उन्होंने एक एक्वेरियम में एक बड़ी पाइक मछली को रखा और उसी एक्वेरियम में उसके खाने के लिए कुछ छोटी मछलियाँ रख दीं। जब भी बड़ी पाइक मछली को भूख लगती वो छोटी मछलियाँ खा लेती। कुछ दिनों बाद जब एक्वेरियम में सारी छोटी मछलियाँ समाप्त हो गईं तो वैज्ञानिकों ने एक्वेरियम के बीच में कांच की एक दीवार लगा दी और दीवार के दूसरी तरफ पहले जैसी ही छोटी मछलियाँ डाल दीं। अब बड़ी पाइक मछली को जब भूख लगती वो छोटी मछलियों की ओर लपकती लेकिन बीच में कांच की दीवार होने के कारण उससे जा टकराती जिससे हर बार उसे चोट लगती। कुछ समय तक तो ये सिलसिला जारी रहा लेकिन बार-बार चोट लगने और छोटी मछलियों तक न पहुँच पाने के कारण बड़ी पाइक मछली ने कांच की दीवार के पार तैरती छोटी मछलियों को खाने की कोशिश करना ही छोड़ दिया।

बड़ी पाइक मछली भूख से बुरी तरह व्याकुल थी लेकिन आगे उसने अपनी भूख मिटाने के लिए किसी तरह का कोई प्रयास नहीं किया और चुपचाप एक कोने में जा कर ठहर गई। जब वह भूख के कारण अत्यन्त व्याकुल अवस्था में पहुँच गई तो वैज्ञानिकों ने एक्वेरयम के बीच में लगाई गई कांच की दीवार को हटा दिया। अब बड़ी पाइक मछली आसानी से छोटी मछलियों को अपना आहार बना सकती थी लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और कुछ दिनों के बाद वह भूख से तड़प-तड़पकर मर गई। प्रश्न उठता है कि बाद में वहाँ पर्याप्त संख्या में छोटी मछलियाँ होने पर भी बड़ी पाइक मछली ने उन्हें अपना शिकार क्यों नहीं बनाया? वास्तव में पहले अनेक कोशिशों में असफल व घायल होने के कारण बड़ी पाइक मछली ने मान लिया कि अब कोई कोशिश काम नहीं आएगी। एक नकारात्मक विश्वास के लिए उसकी कंडीशनिंग हो गई और इस नकारात्मक विश्वास ने ही उसकी जान ले ली।

जीवन में हमारे साथ भी कई बार ऐसा ही होता है। हम भी भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों के कारण नकारात्मक विश्वास से ग्रस्त हो जाते हैं। हमें लगता है कि सफलता अथवा आरोग्य हमारी किस्मत में ही नहीं है अतः प्रयास करना बेकार है। इसी कारण जब सफलता अथवा उन्नति का कोई अवसर हमारे सामने आता भी है तो उसे गुजर जाने देते हैं। क्यों? क्योंकि हमें विश्वास हो जाता है कि पिछले अनुभवों के विपरीत कुछ नहीं हो सकता और समय के साथ ये विश्वास दृढ़ होता जाता है। इस नकारात्मक विश्वास के लिए हमारी कंडीशनिंग हो जाती है। इसी प्रकार के नकारात्मक विश्वासों के कारण ही हम जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते अथवा उत्कृष्टता से कोसों दूर रह जाते हैं या व्याधियों का उपचार नहीं करते अथवा दवाएं नहीं लेते। अब प्रश्न उठता है कि इस स्थिति से उबरने के लिए क्या करें? इसके लिए हमें अपनी नकारात्मक कंडीशनिंग को तोड़ना पड़ेगा। सबसे पहले तो ये बात मन में बिठानी होगी कि हम

पाइक मछली नहीं हैं। पाइक मछली कांच की दीवार को नहीं तोड़ सकती लेकिन हम कांच की दीवार रूपी बाधाओं को आसानी से ध्वस्त कर सकते हैं। रुकावटों को समझना और उन्हें दूर करना ही वास्तविक सफलता है। कई बार कुछ अवरोध लंबे समय तक बने रह सकते हैं लेकिन इसका ये अर्थ कदापि नहीं कि ये अवरोध हटेंगे ही नहीं या इन्हें कभी भी पार नहीं किया जा सकेगा। अवरोध हटने या उन्हें पार करने की संभावना कभी समाप्त नहीं होती। हमें धैर्य के साथ उनके हटने की प्रतीक्षा करने के साथ-साथ उन्हें पार करने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए। यदि अत्यधिक विषम परिस्थितियों के कारण हम कुछ अधिक नहीं कर पाते तो उन परिस्थितियों के बदलने पर हमें फौरन सक्रिय हो जाना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हम सतर्क रहकर घटनाक्रम की पूरी जानकारी रखें।

लोहा गरम होने तक इंतजार करें और जैसे ही लोहा गरम हो जाए उस पर चोट करें अर्थात् जैसे ही परिस्थितियाँ अनुकूल हों हम अपेक्षित प्रतिक्रिया करें। हमारी जो प्रारम्भिक असफलताएँ होती हैं वे असफलताएँ नहीं सफलता के मार्ग के पड़ाव होते हैं। हमारी असफलताएँ ही हमारी सफलता की नींव के पत्थर बनती हैं इसलिए जरूरी है कि असफलता की पीड़ा को भुलाकर हर बार नए सिरे से प्रयास करने का निर्णय लें। व्यवसाय हो अथवा सम्बन्ध या स्वास्थ्य अथवा रोगमुक्ति जीवन के हर क्षेत्र में यही बात लागू होती है। पहले जिन लोगों को टीबी अथवा क्षय रोग हो जाता था उसकी मृत्यु निश्चित थी लेकिन आज इस बीमारी का उपचार न केवल पूरी तरह से सम्भव हो गया है अपितु सरल भी हो गया है।

यदि टीबी अथवा क्षय रोग होने पर हम उस समय का हवाला देकर कहें कि इस रोग का उपचार असंभव था और उपचार न करें अथवा बीच में ही छोड़ दें तो इसके लिए कौन दोषी होगा? हमारा नकारात्मक विश्वास ही इसके लिए उत्तरदायी होगा। कई लोग बड़े जिद्दी होते हैं। उन्हें लाख समझाओ लेकिन कहते रहेंगे कि ये काम तो वे बिल्कुल नहीं कर सकते। ये उनके भूतकाल के निराशादायक व दुखद अनुभवों के कारण भी हो सकता है। कुछ लोग जीवन में बार-बार धोखा खा चुके होते हैं अतः एक तरह से उनका ये विश्वास ठीक भी है लेकिन है ये पूरी तरह से नकारात्मक विश्वास। इसी नकारात्मक विश्वास के कारण वे अपना दृष्टिकोण बदलने को तैयार नहीं होते और जीवन में अनेक संभावनाओं से वंचित रह जाते हैं। जीवन हमेशा संभावनों से पूर्ण होता है लेकिन तभी जब हम भूतकाल के निराशादायक व दुखद अनुभवों से उत्पन्न नकारात्मक विश्वास को अपने अंदर घर न करने दें।

कुछ व्यक्ति जब कोई नया काम करते हैं अथवा कोई नई चीज करना सीखते हैं तो शीघ्र अपेक्षित सफलता न मिलने पर उसे हमेशा के लिए छोड़ देते हैं। जब हम स्कूटर, कार अथवा अन्य वाहन चलाना सीखते हैं तो शुरू में कई समस्याएं आ खड़ी होती हैं। कई बार वाहन चलाते समय हड़बड़ी में कुछ गलती भी हो जाती है। सही समय पर ब्रेक नहीं लगा पाते अथवा गाड़ी की गति धीमी नहीं कर पाते।

ड्राइविंग सीखते समय छोटी-मोटी दुर्घटना भी स्वाभाविक है। यदि ड्राइविंग सीखते समय कोई छोटी-मोटी दुर्घटना हो जाए तो कई लोग उसी वक्त हाथ खड़े कर देते हैं। उनका तर्क होता है कि उनसे फिर कोई दुर्घटना हो जाएगी। ये उनके नकारात्मक विश्वास के कारण ही होता है। नकारात्मक विश्वास उत्पन्न करने में कई बार हमारे अपने कटु अनुभव उत्तरदायी होते हैं तो कई बार हमारे आसपास के लोग भी इसके लिए कम उत्तरदायी नहीं होते।

जब हम लोगों से बार-बार सुनते हैं कि ये तुमसे नहीं होगा या ये तुम्हारे करने की चीज नहीं है तो हममें नकारात्मक विश्वास उत्पन्न होने लगता है। नकारात्मक विश्वास के कारण कई बार हम सीखी हुई चीज भी भूल जाते हैं। एक घटना याद आ रही है। एक सज्जन ने अपनी भतीजी को कार चलानी सिखाई। पहले एक प्रसिद्ध ड्राइविंग कालेज से ड्राइविंग सिखलाई और बाद में स्वयं पर्याप्त अभ्यास करवाया। लड़की कार चलाने में बहुत अच्छी हो गई और स्वयं अकेले ड्राइविंग करने लगी लेकिन लड़की के पिता प्रायः कहते थे कि जब हमारे पास कार ही नहीं है तो सीखने का

क्या फायदा? या कहते थे कि किसी दिन ठोक दी तो लेने के देने पड़ जाएँगे। कुछ दिनों में ही लड़की के अन्दर इतना नकारात्मक विश्वास उत्पन्न हो गया कि वो गाड़ी को छूने से भी डरने लगी। जो भी हो हर प्रकार के नकारात्मक विश्वास की कंडीशनिंग से मुक्ति अनिवार्य है क्योंकि इसका जीवन के हर क्षेत्र में बुरा प्रभाव पड़ता है।

कई बार जीवन में मिली लगातार असफलताओं के बाद व्यक्ति प्रयास करना ही छोड़ देता है लेकिन तभी अचानक एक दिन उसे बड़ी सफलता मिल जाती है। कई लोग इसे किस्मत से मिली सफलता कहते हैं लेकिन वास्तव में ये पिछले प्रयासों अथवा असफलताओं के अनुभवों के कारण ही संभव हो पाता है। बहरहाल हमें असफलताओं से घबराकर न तो आगे प्रयास करना छोड़ना चाहिए और न ही असफलताओं को दोष देना चाहिए। जब हम किसी शिलाखंड को तोड़ना चाहते हैं तो उस पर जोर से वार करते हैं लेकिन प्रायः पहले वार में पत्थर नहीं टूटता। हम जब तक पत्थर टूट नहीं जाता उस पर हथौड़ा चलाते रहते हैं और इसका कारण है हमारा सकारात्मक विश्वास कि पत्थर अंततः किसी न किसी वार से अवश्य टूट जाएगा।

इसलिए जब तक सफलता नहीं मिल जाती तब तक कार्य बीच में छोड़ने की बजाय निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। परिणाम मिलते अवश्य हैं लेकिन कई बार देर से मिलते हैं। हमें अपेक्षित परिणाम अथवा सफलता मिलने तक धैर्य के साथ अपने कार्य में जुटे रहना चाहिए। जीवन में हर प्रकार की सफलता के लिए असंभव शब्द को मन रूपी शब्दकोश से डिलीट करना अनिवार्य है। नकारात्मक विश्वास से मुक्ति के लिए हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि यदि दुनिया में कोई भी काम कोई भी व्यक्ति कर सकता है तो हम भी उसे अवश्य कर सकते हैं। नकारात्मक विश्वास से बचने के लिए किसी भी कार्य को सीखने के लिए पर्याप्त अभ्यास करें, कार्य को पूरे मन से करें व मन में पूर्ण विश्वास रखें कि मैं कर सकता हूँ। मैं भी सफलता प्राप्त कर सकता हूँ।

– सीताराम गुप्ता
ए. डी. १०६-सी, पीतमपुरा
दिल्ली- ११००३४

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

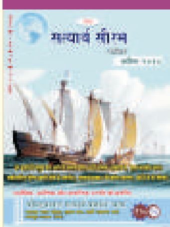

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

डर

प्रसिद्ध साहित्यकार John Galsworthy ने कहा है कि fear is the black godmother of all damnable things- अर्थात् डर उन सभी बातों का कारण है जिन बातों के लिए हम सदा किसी ना किसी वजह से डरते रहते हैं। किसी को कोई डर है तो किसी को कोई डर है। निश्चिंत कोई भी नहीं। हर किसी को किसी ना किसी बात का खटका लगा रहता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार जब कभी भी कोई ऋषि, मुनि या फिर साधक घोर तपस्या करता था तो सबसे पहले इन्द्र देवता को अपना सिंहासन छिन जाने का डर लगता था और वह उसकी तपस्या भंग करने के लिए कोई ना कोई तरीका इस्तेमाल करता था। देवों के देव महादेव ने इन्द्र को सभी दोषों के बावजूद वर्षा का देवता ही नियुक्त किया हुआ था फिर भी उसे हमेशा अपने सिंहासन के डोलने का डर लगा रहता था।

डर का सीधा साधा कारण यह है कि हम यह चाहते हैं कि कहीं वही बात ना हो जाए जो हम नहीं चाहते, वही व्यक्ति हमें ना मिल जाए जिसको हम मिलना नहीं चाहते, कहीं कोई बात हमारे खिलाफ ना हो जाए, कहीं लोग हमारी निंदा ना करें और सब कुछ हमारी इच्छा के मुताबिक हो। बस इसी डर के कारण ही हम कुछ करने योग्य कार्य नहीं करते और ना करने योग्य कार्य करते रहते हैं। इसी डर के कारण हम बंदगी करना बंद कर देते हैंऔर पाप करने पर उतारू हो जाते हैं, झूठ बोलते हैं, हत्या, हिंसा, चुगली, निंदा आदि में लग जाते हैं। डर के कारण हमें कहीं भी मन की शांति या सुकून नहीं मिलता। डर के कारण ही हम अपनों को बेगाना और बेगानों को अपना बनाने की कोशिश करते हैं। डर के कारण ही घर में सुख, शान्ति, संयम, समर्पण भावना, एक दूसरे पर विश्वास तथा त्याग की कमी पाई जाती है। डर के कारण ही देश का विभाजन हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय मुसलमानों को भारत में रहने से डर लगा जिसकी वजह से उन्होंने पाकिस्तान की माँग की। हिंदुओं तथा मुसलमानों को आपस में एक दूसरे से इतना डर लगने लगा कि उन्होंने एक दूसरे का कत्लेआम किया, एक दूसरे की सम्पत्ति जलाई, एक दूसरे की माँ बहनों की इज्जत से खिलवाड़ किया, यातायात के साधनों को नुकसान पहुँचाया, एक दूसरे की सम्पत्ति पर कब्जा किया, लूटमार की। पाकिस्तान बन जाने के बावजूद भी दोनों देशों में आपसी डर के कारण कई युद्ध हुए, पाकिस्तान जम्मू कश्मीर में वहाँ के निवासियों को भारत के खिलाफ बगावत करने के लिए उकसा रहा है आतंकवादियों को भेजकर भारतीय सैनिकों पर हमला करवा रहा है, तोड़फोड़ करवा रहा है। यह सब डर के कारण ही है। अलग-अलग देशों का एक दूसरे के प्रति डर ही है जिसकी वजह से वह बड़ी-बड़ी सेनाएँ रखते हैं, अस्त्र-शस्त्र के ऊपर अरबों रुपया खर्च करते हैं, एक दूसरे के ऊपर हमला करवाते हैं। डर दोस्ती को दुश्मनी में और दुश्मनी को दोस्ती में बदल देता है।

सब अपनी सेहत का अपने अपने ढंग से ध्यान करते हैं। सुबह की सैर करते हैं, योग करते हैं, व्यायाम करते हैं, खेल खेलते हैं, लाफिंग क्लब के मेंबर बनते हैं, जिम जाते हैं। इन सब बातों का उद्देश्य यह है कि हमें डर लगता है कि कहीं हम बीमार ना पड़ जाएँ, जल्दी बूढ़े ना हो जाएँ। हम अपने खाने-पीने का विशेष ध्यान रखते हैं। संतुलित तथा पौष्टिक भोजन खाते हैं। भोजन चबा-चबा कर खाते हैं। मौसम की फल और सब्जियाँ खाते हैं। आवश्यकता के अनुसार आराम

करते हैं। इन सब बातों के अलावा हम कथा, कीर्तन, सत्संग, ध्यान में भी समय लगाते हैं। इसके पीछे हमारा परमात्मा से डर होता है। हम बहुत सारे काम इसलिए नहीं करते या इसलिए करते हैं क्योंकि हमें परमात्मा का डर होता है। बहुत सारे लोग परमात्मा का डर दिखाकर हमसे अपना काम करवा लेते हैं। परमात्मा के डर के कारण ही हम भिखारियों को भीख देते हैं, जरूरतमन्दों की सहायता करते हैं, लाचार, अनाथ, अपाहिज लोगों की देखभाल करते हैं। कई लोगों को अपने बुरे कामों के बुरे अंजाम का भी डर लगता है। जैसी करनी वैसी भरनी.... यह कहावत लोगों के मन में डर पैदा करती है। जब कोई व्यक्ति हमारे साथ अन्याय करता है और हम उसका मुकाबला नहीं कर पाते तो हम उसे परमात्मा का डर दिखाकर कहते हैं- अच्छा, कोई बात नहीं! परमात्मा तो देख रहा है ना! वही इंसाफ करेगा इस तरह हम परमात्मा के नाम से भी डरते हैं।

जो पैदा हुआ है वह एक दिन मरेगा जरूर। पैदा होने के बाद बचपन, जवानी, बुढ़ापा और मृत्यु इनका होना सृष्टि की रचना होने के बाद से होता रहा है। यहाँ हर आदमी जवान रहना चाहता है, बुढ़ापे से और मौत से उसे डर लगता है। जब आदमी मर रहा होता है तो उसे बचाने के लिए डाक्टर और वैद्य पूरा जोर लगाते हैं कई बार जादू टोना और ताबीज आज भी इस्तेमाल किया जाता है लेकिन मौत है फिर भी आती है। हर आदमी मौत का नाम सुनकर कांप जाता है। रावण ने मौत को जीत रखा था, आखिरकार मौत ने रावण को भी मार दिया।

हम अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए दूसरे लोगों के साथ दोस्ती करते हैं। इसका उद्देश्य एक दूसरे के काम में मदद करना या दुःख सुख में काम आना होता है। परिवार नाम की संस्था की स्थापना भी तो इसलिये की गई थी कि इकट्ठे रहते हुए परिवार के सदस्य एक दूसरे की सहायता करें, एक दूसरे के काम आएं, एक दूसरे की सेवा करें। यही कारण है कि जब हमारा कोई मित्र या रिश्तेदार या परिवार का सदस्य हमें छोड़ कर जाता है तो हमें यह डर सताता है कि अब आगे को हमारी मदद कौन करेगा। तभी तो परिवार के किसी सदस्य के मरने पर लोग मातम मनाते हैं। अलग होने का डर भी हमें चैन नहीं लेने देता। आजकल महिलाओं के कामकाजी होने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। लड़कियाँ लड़कों की तरह ऊँची पढ़ाई पढ़ती हैं और लड़कों की तरह नौकरी करती हैं। अब वह जमाना गया जब लड़कियाँ केवल घर की चारदीवारी के अन्दर कैद होकर रह जाती थी। आजकल तो लड़कियाँ लड़कों की तरह सब प्रकार की नौकरियाँ करती हैं। ऐसे में पुरुष के मन में स्त्री के पथभ्रष्ट होकर उससे अलग होने का डर उसे रात-दिन सताता रहता है। अगर किसी कामकाजी महिला को कार्यालय का उसका कोई सहयोगी उसको मिलने के लिए घर आ जाए तो पुरुष को इस बात का डर सताता है कि कहीं यह उसके साथ भाग ही ना जाए। महिलाओं के मन में भी यही डर देखा जा सकता है।

आदमी के डर का एक और कारण उसकी असुरक्षा भी होती है। अगर हम अन्धेरे में जा रहे हैं तो हमें अपनी मंजिल तक पहुँचने तक डर सताता रहता है कि कहीं कोई हमें लूट ही ना ले, हमें मार ही ना दें। अमीर आदमी के पास बहुत सारा धन होता है। वह ऊँची ऊँची बिल्डिंग में रहता है। उसने

अपनी सुरक्षा के लिए कुत्ते पाल रखे होते हैं, सुरक्षा गार्ड नियुक्त कर रखे होते हैं, इस सारे के बावजूद भी उसको इस बात का डर सताता है कि कहीं उसके धन की चोरी ना हो जाए, कोई उसकी हत्या ना कर दे, कोई उसका प्रतिद्वन्दी बिजनेस में उसको मात ना दे दे, बिजनेस में उसको घाटा ना हो जाए, उसको ब्लड प्रेशर, हार्ड अटैक, डायबिटीज, कैंसर, एड्स कोरोना आदि कोई बीमारी ना लग जाए।

इस तरह जहाँ गरीब को अपने ढंग से डर लगता है वहाँ अमीर को भी अपने ढंग से डर लगता है।

लेकिन इसके बावजूद भी हर बात पर डर-डर के जीना भी कोई जीना होता है। आदमी को सावधान तो रहना चाहिए, जिस बात का डर हो उससे बचने के लिए बचाव का प्रबन्ध भी करना चाहिए, लेकिन बाकी सब कुछ परमात्मा पर छोड़ देना चाहिए। जो होना है वह होकर रहेगा और जो नहीं होना वह बिल्कुल नहीं होगा। आदमी को किसी के साथ वैर भावना नहीं रखनी चाहिए, किसी को अपशब्द नहीं कहना चाहिए, किसी का हक नहीं मारना चाहिए, अपने धन,

संपत्ति, जवानी, हैसियत तथा पद का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए, लड़ाई झगड़े से बच कर रहना चाहिए, ऐसी स्थिति में जिंदगी का बहुत सारा डर तो नजदीक ही नहीं आएगा। आदमी को मुसीबत आने पर हिम्मत से उसका मुकाबला करना चाहिए, डर के भाग जाने से डर और डरायेगा। आदमी को झूठ, पाखण्ड, काम, क्रोध, अहंकार से बचना चाहिए ऐसी स्थिति में परमात्मा द्वारा सजा दिए जाने का डर नहीं रहता। आदमी को यह मान लेना चाहिए कि बचपन के बाद जवानी, बुढ़ापा और मृत्यु ने तो आना ही है फिर डर किस बात का। ईमानदारी से कमाए हुए धन को पुण्य कार्यों में भी लगाना चाहिए इससे मन को सुकून मिलता है और डर कम होता है। आदमी को जाने अनजाने गैर कानूनी काम नहीं करना चाहिए। जो आदमी जितने गैर कानूनी काम करता है उसको उतना ही डर ज्यादा सताता है। क्योंकि गैरकानूनी काम करने वाला आदमी एक न एक दिन तो पुलिस के हत्थे चढ़ता ही है। आदमी को किसी का हक नहीं मारना चाहिए। उधार लिए हुए पैसे को समय पर वापस कर देना चाहिए। बच्चों को अच्छे संस्कार देने चाहिए इससे परिवार की बदनामी का डर खत्म हो जाता है। अगर कोई पाप हो जाए तो उसके लिए पश्चाताप करना चाहिए। हमें बेफिक्र होकर, निडर होकर जीना चाहिए। चार दिन की जिन्दगी है हँस खेलकर जिओ, मर मर कर और डर डर कर जीवन बर्बाद नहीं करना चाहिए। मौत तो एक दिन आएगी, रोज-रोज डर डर कर मरने से क्या फायदा। हिम्मत, हौसले और बहादुरी से जियो, डर कर मत जियो।

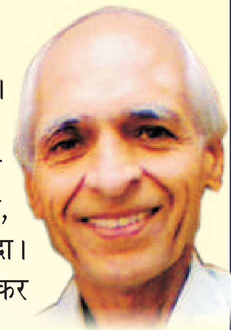

प्रोफेसर शामलाल कौशल
मकान नं. ९७५, बी/२०
ग्रीन रोड़, रोहतक- १२४००१ (हरि.)

■■■

सत्यार्थ प्रकाश भवन, उदयपुर स्थिति 'दीनदयाल सुरेश चन्द्र आर्य संस्कार वीथिका' परिसर में निर्माणाधीन संस्कारों की झाँकियों हेतु एक संस्कार को प्रायोजित करने की पवित्र भावना से श्रीमती शारदा गुप्ता, उदयपुर द्वारा तीन लाख रु. का सात्विक दान न्यास को दिया गया। हार्दिक आभार।

-भवानीदास आर्य, मंत्री, न्यास

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०५/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (दशम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	स्ति १	१	■	२	र २	२	२	मा २	२
■	३ अ	३		का ३	■	४	४	चा ४	४
५	ता ५	■	६	चा ६	६	ह ७	७	व ७	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो वेद की निन्दा करता है वह क्या कहाता है?
२. जो धर्म को जानने की इच्छा करे, उनके लिए वेद क्या है?
३. व्यास जी अपने पुत्र शुक और शिष्य सहित पाताल में निवास करते थे। अब उस पाताल को क्या कहते हैं?
४. आप्त जो सत्यवादी, धर्मात्मा, परोपकारप्रिय जन हैं, उनका संग करने का क्या नाम है?
५. सब शास्त्र, आप्त विद्वान् अज्ञानी को बालक और ज्ञानी को क्या कहते हैं?
६. जो सत्यभाषणादि कर्मों का आचरण करना है, वही वेद और स्मृति में कहा हुआ .... है?
७. यूरोप को प्राचीन युग में किस नाम से जाना जाता था?

"विस्तृत नियम पृष्ठ २० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ सितम्बर २०२०

धर्मान्तरण का कुचक्र (नियोगी समिति की रिपोर्ट)

कई वर्ष पहले दूर दक्षिण भारत से बाबा माधवदास नामक एक संन्यासी दिल्ली में 'वायस ऑफ इण्डिया' प्रकाशन के कार्यालय पहुँचे। उन्होंने सीताराम गोयल की कोई पुस्तक पढ़ी थी, जिसके बाद उन्हें खोजते-खोजते वह आए थे। मिलते ही उन्होंने सीताराम जी के सामने एक छोटी सी पुस्तिका रख दी। यह सरकार द्वारा १९५६ में बनी सात सदस्यीय जस्टिस नियोगी समिति की रिपोर्ट का एक सार-संक्षेप था। यह संक्षेप माधवदास ने स्वयं तैयार किया, किसी तरह माँग-मूँग कर उसे छपाया और तब से देश भर में विभिन्न महत्वपूर्ण, निर्णयकर्त्ता लोगों तक उसे पहुँचाने, और उन्हें जगाने का अथक प्रयास कर रहे थे। किन्तु अब वह मानो हार चुके थे और सीताराम जी तक इस आस में पहुँचे थे कि वह इस कार्य को बढ़ाने का कोई उपाय करेंगे।

माधवदास ने देश के विभिन्न भागों में घूम-घूम कर ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ स्वयं ध्यान से देखी थीं। उन्हें यह देख बड़ी वेदना होती थी कि मिशनरी लोग हिन्दू धर्म को लांछित कर, भोले-भाले लोगों को छल से जाल में फसा कर, दबाव देकर, भावनात्मक रूप से ब्लैकमेल कर आदि विधियों से ईसाइयत में धर्मान्तरित करते थे। सबसे बड़ा दुःख यह था कि हिन्दू समाज के अग्रगण्य लोग, नेता, प्रशासक, लेखक इसे देख कर भी अनदेखा करते थे। यह भी माधवदास ने स्वयं अनुभव किया। वर्षों यह सब देख-सुन कर अब वे सीताराम जी के पास पहुँचे थे। सीताराम जी ने उन्हें निराश नहीं किया। उन्होंने न केवल जस्टिस नियोगी समिति रिपोर्ट को पुनः प्रकाशित किया, वरन् ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों की ऐतिहासिक क्रम में समीक्षा करते हुए 'छद्म-पंथनिरपेक्षता, ईसाई मिशन और हिन्दू प्रतिरोध' नामक एक मूल्यवान पुस्तिका भी लिखी। पर ऐसा लगता है कि हिन्दू उच्च वर्ग की काहिली और अज्ञान पर शायद ही कुछ असर पड़ा हो।

उदाहरण के लिए, सात वर्ष पहले जब 'तहलका' ने साप्ताहिक पत्रिका आरम्भ की तो अपना प्रवेशांक (७ फरवरी २००४) भारत में ईसाई विस्तार के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र पर केन्द्रित किया। इसके लिए अमेरिकी सरकार तथा अनेक विदेशी चर्च संगठनों द्वारा भारी अनुदान, अनेक मिशनरी संगठनों के प्रतिनिधियों से बातचीत, उनके दस्तावेज, मिशनरियों द्वारा भारत के चप्पे-चप्पे का सर्वेक्षण और स्थानीय विशेषताओं का उपयोग कर लोगों का धर्मान्तरण कराने के कार्यक्रम आदि सम्बन्धी भरपूर खोजबीन और प्रमाण 'तहलका' ने जुटा कर प्रस्तुत किया था। किन्तु उस पर भारतीय नेताओं, बुद्धिजीवियों, प्रशासकों की क्या प्रतिक्रिया रही? कुछ नहीं, एक अभेद्य मौन! मानो

उन्होंने कुछ न सुना हो। जबकि मिशनरी संगठनों में उस प्रकाशन से भारी चिन्ता और बेचैनी फैली (क्योंकि वे उस पत्रिका को संघ-परिवार का दुष्प्रचार बताकर नहीं बच सकते थे)। उन्होंने तरह-तरह के बयान देकर अपना बचाव करने की कोशिश की। मगर हिन्दू समाज के प्रतिनिधि निर्विकार बने रहे। हमारे जिन बुद्धिजीवियों, अखबारों, समाचार चैनलों ने उसी तहलका द्वारा कुछ ही पहले रक्षा मंत्रालय सौदों में रिश्वतखोरी की सम्भावना का पर्दाफाश करने पर खूब उत्साह दिखाया था, और रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस समेत सबके इस्तीफे की माँग की थी। वही लोग उसी अखबार के इस पर्दाफाश पर एकदम गुम-सुम रहे। मानो इस में कोई विशेष बात ही न हो।

ठीक यही पचपन वर्ष पहले नियोगी समिति की रिपोर्ट आने पर भी हुआ था। जहाँ मिशनरी संगठनों में खलबली मच गई थी, वहीं हमारे नेता, बुद्धिजीवी, अफसर, न्यायविद सब ठस बने रहे। अंततः संसद में सरकार ने यह कह कर कि समिति की अनुशंसाएं संविधान में दिए मौलिक अधिकारों से मेल नहीं खाती, मामले को रफा-दफा कर दिया। कृपया ध्यान दें- किसी ने यह नहीं कहा कि समिति का आंकलन, अन्वेषण, तथ्य और साक्ष्य त्रुटिपूर्ण है। बल्कि सबने एक मौन धारण कर उसे चुप-चाप धूल खाने छोड़ दिया। (उसके तैंतालीस वर्ष बाद, १९९९ में, यही जस्टिस वधवा कमीशन रिपोर्ट के साथ भी हुआ, जिसने उड़ीसा में आस्ट्रेलियाई मिशनरी ग्राहम स्टेंस की हत्या के सम्बन्ध में विस्तृत जाँच की थी)। हिन्दू सत्ताधारियों व बौद्धिक वर्ग की इस भीरू भंगिमा को देखकर सहमे हुए मिशनरी संगठनों का साहस तुरन्त स्वाभाविक रूप से बढ़ गया। सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में उनकी गतिविधियाँ इतनी अशान्तिकारक हो गईं कि उड़ीसा व मध्य प्रदेश की सरकारों को क्रमशः १९६७ और १९६८ में धूर्तता और प्रपंच द्वारा धर्मान्तरण कार्यों पर अंकुश लगाने के लिए कानून बनाने पड़े। उस से माधवदास जैसे दुखियारों को कुछ प्रसन्नता मिली। मगर वह क्षणिक साबित हुई क्योंकि उन कानूनों को लागू कराने में किसी ने रुचि नहीं ली। जिन स्थानों में मिशनरी सक्रिय थे, वहाँ इन कानूनों को जानने और उपयोग करने वाले नगण्य थे। जबकि शहरी क्षेत्रों में जो हिन्दू यह सब समझने वाले और समर्थ थे, उन्होंने रुचि नहीं दिखाई कि इन कानूनों के प्रति लोगों को जगाकर चर्च के विस्तारवादी आक्रमण को रोकें।

एक अर्थ में आश्चर्य है कि ब्रिटिश भारत में मिशनरी विस्तारवाद के विरुद्ध हिन्दू प्रतिरोध सशक्त था, जबकि स्वतंत्र भारत में यह मृतप्राय हो गया। १९४७ से पहले के हमारे राष्ट्रीय विचार-विमर्श, साहित्य, भाषणों आदि में इस का नियमित उल्लेख मिलता है कि विदेशी मिशनरी भारतीय धर्म-संस्कृति को लांछित, नष्ट करने और भारत को विखण्डित कर जहाँ-जहाँ सम्भव हो स्वतंत्र ईसाई राज्य बनाने के प्रयास कर रहे हैं। तब हमारे नेता, लेखक, पत्रकार अच्छी तरह जानते थे कि यूरोपीय साम्राज्यवाद और ईसाई विस्तारवाद दोनों मूलतः एक दूसरे के पूरक व सहयोगी हैं। इसलिए १९४७ से पहले के राष्ट्रीय लेखन, वाचन में इस के प्रतिकार की चिन्ता, भाषा भी सर्वत्र मिलती है। किन्तु स्वतंत्रता के बाद स्थिति विचित्र हो गई। स्वयं देश के संविधान में धर्म प्रचार को 'मौलिक अधिकार' के रूप में उच्च स्थान देकर मिशनरी विस्तारवाद को सिद्धान्ततः वैधता दे दी गई।

जबकि स्वतंत्रता से पहले गाँधीजी जैसे उदार व्यक्ति ने भी स्पष्ट कहा था कि यदि उन्हें कानून बनाने का अधिकार मिल जाए तो वह 'सारा धर्मान्तरण बंद करवा देंगे जो अनावश्यक अशान्ति की जड़ है'। पर उन्हीं गाँधी के शिष्यों ने, यह सब जानते हुए भी कि कौन, किन तरीकों, उद्देश्यों से धर्मान्तरण कराते हैं, मिशनरियों को उलटे ऐसी छूट दे दी जो उन्हें ब्रिटिश राज में भी उपलब्ध न थी। देशी-विदेशी मिशनरी संगठनों को यह देख आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता हुई, जो उन्होंने छिपाई भी नहीं। उन्होंने भारत को अपने प्रमुख निशाने के रूप में चिह्नित कर लिया। परिणामस्वरूप अंततः उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में अलगाववाद की आँच सुलग उठी। इसके पीछे असंदिग्ध रूप से मिशनरी प्रेरणाएँ थीं।

इसी पृष्ठभूमि में हम बाबा माधवदास जैसे देशभक्तों की वेदना समझ सकते हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष देखा कि भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता ने हिन्दू धर्म-संस्कृति व समाज की सुरक्षा निश्चित करने के बदले, उल्टे उसे अपने हाल पर छोड़ दिया है। विदेशी, साम्राज्यवादी, सशक्त संगठनों को खुल कर खेलने से रोकने का कोई उपाय नहीं किया। उन का अवैध, धूर्ततापूर्ण खेल देख-सुन कर भी स्वतंत्र भारत के नेता, लेखक, पत्रकार, बुद्धिजीवी उस से मुँह चुराने लगे। नियोगी समिति ने जो प्रमाणिक आकलन किया था, उसका महत्व इस में भी है कि स्वतंत्र भारत के मात्र पाँच-सात वर्षों में मिशनरी धृष्टता कितनी बेलगाम हो चली थी। उस रिपोर्ट की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उस की एक-एक बात और अनुशंसाएं आज भी उतनी ही समीचीन हैं। कम से कम हम उसे पढ़ भी लें तो बाबा माधवदास की आत्मा को संतोष

होगा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में ईसाई मिशनरी संगठनों को भय था कि अब उन का कारोबार बाधित होगा। आखिर स्वयं गाँधीजी जैसे सर्वोच्च नेता ने खुली घोषणा की थी कि कानून बनाने का अधिकार मिलने पर वह सारा धर्मान्तरण बंद करवा देंगे। किन्तु मिशनरियों की खुशी का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि उन की दुकान बंद कराने के बदले, भारतीय संविधान में धर्मान्तरण कराने समेत धर्म प्रचार को 'मौलिक अधिकार' के रूप में उच्च स्थान मिल गया है। इसमें किसी सन्देह को स्वयं प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू ने दूर कर दिया था। नेहरू ने मुख्यमंत्रियों को लिखे अपने पत्र (१७ अक्टूबर १९५२) में स्पष्ट कर दिया, 'वी परमिट, बाई अवर कंस्टीच्यूशन, नाट ओनली फ्रीडम आफ कांशेंस एण्ड बिलीफ बट आलसो प्रोजेलाइटिज्म'। और यह प्रोजेलाइटिज्म मुख्यतः चर्च-मिशनरी करते हैं और किन हथकण्डों से करते हैं, यह उस समय हमारा प्रत्येक नेता जानता था।

जब स्वतंत्र भारत का संविधान बन रहा था, तो संविधान सभा में इस पर हुई पूरी बहस चकित करने वाली है कि कैसे

हिंदू समाज खुली आँखों जीती मक्खी निगलता है। एक ही भूल बार-बार करता, दुहराता है, चोट खाता है, फिर भी कुछ नहीं सीखता। धर्मान्तरण कराने समेत 'धर्म-प्रचार' को मौलिक अधिकार बनाने का घातक निर्णय मात्र एक-दो सदस्यों की जिद पर कर दिया गया। इसके बावजूद कि धर्म-प्रचार के नाम पर इस्लामी और ईसाई मिशनरियों द्वारा जुल्म, धोखा-धड़ी, रक्तपात और अशान्ति के इतिहास से हमारे संविधान निर्माता पूर्ण परिचित थे। इसीलिए संविधान सभा में पुरुषोत्तमदास टंडन, तजामुल हुसैन, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, हुसैन इमाम, जैसे सभी सदस्य 'धर्म-प्रचार' के अधिकार को मौलिक अधिकार में जोड़ना अनुचित मानते थे। फिर भी केवल 'ईसाई मित्रों का ख्याल करते हुए' उसे स्वीकार कर बैठे। यह उस हिन्दू भोलेपन का ही पुनः अनन्य उदाहरण था जो 'पर-धर्म' को गम्भीरता-पूर्वक न जानने-समझने के कारण इतिहास में असंख्य बार ऐसी भूलें करता रहा है।

इसीलिए स्वतंत्र भारत में मिशनरी कार्य-विस्तार की समीक्षा करते हुए जेसुइट मिशनरी फेलिक्स अलफ्रेड प्लैटर ने अपनी पुस्तक 'द कैथोलिक चर्च इन इंडियाः येस्टरडे एंड टुडे' (१९६४) में भारी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने सटीक समझा कि भारतीय संविधान ने न केवल भारत में चर्च को अपना धंधा जारी रखने की छूट दी है, बल्कि 'टु इनक्रीज एण्ड डेवलप हर एक्टिविटी ऐज नेवर बिफोर विदाउट सीरियस हिंडरेंस आर एंक्जाइटी'। यह निर्विघ्न, निश्चिन्त, अपूर्व छूट पाने का ही परिणाम हुआ कि चार-पाँच वर्ष में ही कई क्षेत्रों में मिशनरी गतिविधियाँ अत्यन्त उछृंखल हो गईं। तभी सरकार ने मिशनरी गतिविधियों का अध्ययन करने और उस से उत्पन्न समस्याओं पर उपाय सुझाने के लिए १९५४ में जस्टिस बी. एस. नियोगी की अध्यक्षता में एक सात सदस्यीय समिति का गठन किया। इस में ईसाई सदस्य भी थे। समिति ने १९५६ में अपनी रिपोर्ट दी, जिसका सम्पूर्ण आकलन आँखें खोल देने वाला था। किन्तु कोई कार्रवाई नहीं हुई। न किसी ने उस के तथ्यों, साक्ष्यों को चुनौती दी, न खण्डन किया। केवल मौन के षड्यंत्र द्वारा उसे इतिहास के तहखाने में डाल दिया गया।

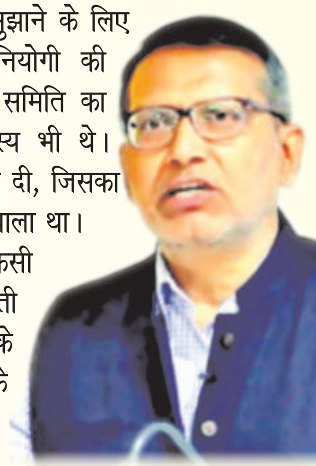

क्रमशः ....

– डॉ. शंकर शरण

सत्यार्थ प्रकाश भवन, उदयपुर स्थित **'दीनदयाल सुरेश चन्द्र आर्य संस्कार वीथिका'** परिसर में निर्माणाधीन संस्कारों की झाँकियों हेतु डॉ. सुखदेव चन्द सोनी, शिकागो द्वारा पाँच लाख रु. का सात्विक दान न्यास को दिया गया। हार्दिक आभार। – भवानीदास आर्य, मंत्री, न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, उदयपुर स्थिति **'दीनदयाल सुरेश चन्द्र आर्य संस्कार वीथिका'** परिसर में निर्माणाधीन संस्कारों की झाँकियों हेतु श्री जयदेव आर्य, राजकोट द्वारा तीन लाख रु. का सात्विक दान न्यास को दिया गया। हार्दिक आभार। – भवानीदास आर्य, मंत्री, न्यास

क्रान्तिवीर अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे

कथा सरित

प्रसिद्ध कवि माखन लाल चतुर्वेदी ने कभी बड़ी सुन्दर पंक्तियाँ लिखीं, जो पुष्प की अभिलाषा के नाम से प्रसिद्ध हुयीं-

मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

रगों में ऊष्मा का संचार कर देने वाली पंक्तियाँ हैं ये। देशभक्त को कुछ नहीं चाहिए, वह अपनी माँ को स्वतन्त्र कराने के लिए कुछ भी यहाँ तक कि अपने प्राण न्योछावर करने को समुत्सुक है। आश्चर्य तो यह है कि जब स्वतंत्रता की अभिलाषा लिए पुष्प ही नहीं कलियों ने भी अपने जीवन को निःसंकोच आहूत कर दिया पर दुःख इस बात का है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इन मासूम वीरों को पूर्णतः विस्मृत कर दिया। यह कृतघ्नता है। यह पाप राष्ट्र द्वारा किया गया है। कितने लोगों को ज्ञात है कि १२ से लेकर १८ वर्ष के सैंकड़ों जियालों ने अंग्रेजों की आँखों में आँख डालकर मौत को गले लगा लिया। इतिहास जिनके द्वारा निर्मित किया गया उन्होंने इस तथ्य की घोर उपेक्षा की।

अंग्रेजों के चाटुकार बुद्धिजीवियों ने भले ही अंग्रेजों के शासन को भारतीयों के लिए वरदान बताया हो पर जहाँ महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द ने १८७५ में ही अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में यह घोषणा कर दी थी कि विदेशी साम्राज्य चाहे माता-पिता के समान सुखदायक हो तब भी स्वीकार्य नहीं है और इसीलिए उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वराज्य व स्वदेशी का नारा दिया। इसी स्वराज्य के ममत्व को उन पुष्पों और कलियों ने इतनी गहरायी से अनुभव किया कि किशोर वय में भी स्वराज्य के लिए अपने प्राणों के उत्सर्ग में उन्होंने तनिक भी संकोच का अनुभव नहीं किया।

वास्तविकता तो यह है कि जिन गिने चुने स्वतंत्रता सैनानियों को आज की पीढ़ी जानती है वह केवल चन्द नाम हैं, वास्तविकता तो यह है कि कैलेण्डर का एक भी पृष्ठ जब हम पलटते हैं तो हर पृष्ठ पर हर तारीख पर अनेकों बलिदानियों के चेहरे स्वतन्त्र भारत को देख मुस्करा रहे होते हैं परन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् जिन लोगों के कन्धों पर भारत के इस स्वर्णिम इतिहास की रक्षा करने और प्रकाशित करने का दायित्व था उनके प्रमाद और कृतघ्नता के कारण वे हमारी दृष्टि से ओझल हैं।

आज हम ऐसे एक बहादुर किशोर की संक्षिप्त चर्चा यहाँ कर रहे हैं जिसने मात्र १७ वर्ष की अवस्था में नागपुर के धूर्त और दोगले कलेक्टर जैक्सन को भरे हाल में बेधड़क गोली मार दी। जी, हाँ! यदि आपने कभी नाम सुना हो तो हम वीर अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे की चर्चा कर रहे हैं।

जैक्सन नासिक का कलेक्टर था। हमने जैक्सन को धूर्त और दोगला क्यों कहा? क्योंकि उसके दो चरित्र थे, दो चेहरे थे। एक ओर तो वह अपने आप को भारत और भारतीयता का अनुरक्त प्रदर्शित करता था। संस्कृत और संस्कृत साहित्य की महत्ता की बात करता था। वह कहता था कि पूर्व जन्म में वह एक वेदभक्त ब्राह्मण था इसलिए वह भारत के प्रति इतना आकर्षण रखता है। वह मराठी भाषा में बात करता था। भारतीय नेताओं से सहृदयता दिखाता था। ऐसा करके एक ओर वह उन लोगों की खोज खबर रखता था जो ब्रिटिश शासन के विरोधी थे तो दूसरी ओर भारतीयों को यह विश्वास दिलाता था कि अंग्रेज उनके दुश्मन नहीं वे तो भारतीयों का भला चाहते हैं। दूसरी ओर अपनी कौम का वह जबरदस्त पक्षपाती था। गोल्फ की गेंद मात्र छू लेने के कारण जब अंग्रेज अफसर एक भारतीय की पीट-पीट कर हत्या कर देता है तो न्याय दिलाने की बजाय उस अंग्रेज अफसर को वहाँ से अन्यत्र भेज दिया जाता है और मृतक भारतीय के बारे में प्रसिद्ध कर दिया जाता है कि दस्तों के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

अंग्रेजों का यह व्यवहार कोई नया नहीं था ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय से यही सब हो रहा था, जिसकी इंतहा जलियाँवाला बाग के नरसंहार में हुयी। डायर का क्या बिगड़ा? इस निर्मम हत्याकाण्ड के जनक को कोई सजा नहीं दी गयी। अंत में भारत माँ के लाडले ऊधम सिंह ने ७५ वर्षीय डायर को गोली मार निरपराधों के खून का बदला लिया। यही क्रूर मानसिकता जैक्सन की थी। गणेश सावरकर को सचाई बयान करने के लिए आजीवन कारावास की सजा सुनाने से नासिक में घोर असंतोष फैल गया।

ऐसे में अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे ने उसके आतंक को समाप्त करने के लिए अपने आप को सहर्ष प्रस्तुत कर दिया।

किसी ने सही लिखा है- विप्लव का बीज किस स्थल पर और कब जड़ पकड़ कर प्रस्फुटित होगा यह एक गहन अध्ययन का विषय है, जीवन के आनन्दोपभोग सरलता से प्राप्त करते हुए भी कोई व्यक्ति क्यों और कैसे विप्लव का पथिक बनता है, यह एक पहेली है, परन्तु ऐसा होता आया है, और यही वास्तविकता है। अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे का जन्म १८९१ ई. में मध्य प्रदेश के इन्दौर में हुआ था। उनके पूर्वज महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के निवासी थे। उनकी आरम्भिक शिक्षा इन्दौर में ही हुई थी। इसके बाद अपनी आगे की शिक्षा के लिए वे अपने मामा के पास औरंगाबाद चले गए।

यहाँ अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे विनायक दामोदर सावरकर द्वारा बनायी अभिनव भारत के सदस्य बने। कहा जाता है कि उन्हें सदस्य बनाने से पूर्व उनकी दृढ़ता की अनेक प्रकार से परीक्षा ली गयी जिसमें वे सौ प्रतिशत उत्तीर्ण हुए। यहीं अनन्त की मुलाकात दो अन्य क्रान्तिकारी युवा साथियों से हुई जिनके नाम थे कृष्णाजी गोपाल कर्वे और विनायक नारायण देशपाण्डे। अन्ना कर्वे यानी कृष्णाजी गोपाल कर्वे वकालत कर रहे थे और विनायक इंगलिश स्कूल में अध्यापक थे। अभिनव भारत के प्रमुख सदस्यों ने योजना बनायी कि जैक्सन की गोली मारकर हत्या कर देनी चाहिए थी। वीर सावरकर के बड़े भाई बाबासाहब सावरकर द्वारा नासिक और उसके आसपास गुप्त क्रान्तिकारी संगठन बनाए गए थे। देश प्रेम का माहौल था और हर कोई उत्सर्ग के लिए तैयार था। जैक्सन की हत्या करने की योजना में प्रमुख भूमिका कान्हेरे, कर्वे व क्रान्तिकारी विनायक नारायण देशपाण्डे को निभानी थी।

जिस समय क्रान्तिकारी जैक्सन को मारने की योजना बना रहे थे ब्रितानी हुकूमत ने जैक्सन को पदोन्नत कर आयुक्त बना दिया। जैक्सन की विदायी के लिए नासिक के विजयानन्द थियेटर में शारदा नाटक का मंचन किया जाना था। क्रान्तिकारियों ने उसी समय जैक्सन को मारने की योजना बनायी। योजना यह थी कि सर्वप्रथम अनन्त जैक्सन को गोली मारेंगे। अगर किसी कारण वे असफल रहते हैं तो कर्वे और विनायक यह कार्य सम्पन्न करेंगे। जैक्सन को मारने के पश्चात् स्वयं को भी समाप्त करने का निर्णय ले लिया गया।

नासिक के लोगों ने जैक्सन की विदायी का जो समारोह २१ दिसम्बर १९०९ को रखा, वीर क्रान्तिकारियों ने इसी दिन को जैक्सन का डेथ वारण्ट निकाल दिया। अनन्त ने साथियों को जैसे-तैसे मनाकर यह जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली जब कि वह जानते थे कि वह वहाँ से जिन्दा नहीं बच सकते। पर वह वीर ही क्या कि एक शिकन भी माथे पर पड़ जाय। अनन्त पूरी तैयारी के साथ विजयानन्द थिएटर में पहुँच गए। कार्यक्रम जैसे ही प्रारम्भ हुआ वे जैक्सन के ठीक सामने जा पहुँचे और चार गोलियाँ उसके सीने में उतार दीं। दोगले दुष्ट का अन्त तो सुनिश्चित था परन्तु योजनानुसार अनन्त कान्हेरे स्वयं को समाप्त न कर सके। उन्हें पकड़ लिया गया। शासन का दमन चक्र चला और अनेकों क्रान्तिकारी गिरफ्तार हुए। कुल ३८ लोगों को गिरफ्तार किया गया।

कान्हेरे ने अपने पर चले मुकदमे को भी अपनी बात कहने और पूरे देश में राष्ट्रभक्ति का सन्देश देने का साधन बना लिया।

मुकदमे के दौरान, अनन्त कान्हरे ने अपने बयान में कहा-

'मैने जो कुछ किया है, वह मेरा कर्तव्य था ब्रिटिश शासन का न्याय गूँगा, बहरा और अँधा है। इसने गणेश सावरकर को काले पानी की सजा दी और सारी सम्पत्ति जब्त कर ली, केवल एक अपराध के लिए कि उन्होंने अपने देश की भक्ति में कुछ कवितायें लिखी थीं तो क्या देश भक्ति के गीत गाना अपराध है या हत्या है ?'

कान्हेरे ने भरी अदालत में कहा, मैं पूछता हूँ-

'अंग्रेज इंजिनियर मिस्टर विलियम ने एक भारतीय गाड़ीवान को, एक किसान को जो अपनी बैलगाड़ी हांक रहा था, जान से मार डाला। लेकिन उसे इस हत्याकाण्ड के बदले दण्डित करना तो दूर रहा, ऊपर से पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। जिस शासन में ऐसा अत्याचार हो रहा था, जैक्सन उसी के एक सदस्य थे इसलिए मैने उन्हें मारा है, जान बूझकर मारा है, न्याय की रक्षा के लिए मारा है।'

'एक भारतीय, यदि वह सचमुच भारतीय है, उसकी नसों में भारत के अन्न जल से बना रक्त प्रवाहित हो रहा है, वह अपने देशवासियों पर किसी विदेशी शासन का ऐसा अत्याचार कैसे सहन कर सकता है? यह कदापि सम्भव नहीं है। विद्रोह की यह आग ब्रिटिश शासन के जुल्म से दबेगी नहीं और बढ़ेगी।'

चार मास की सुनवायी के बाद कान्हेरे को फांसी की सजा दे दी गयी। परिजनों को उनका शव भी नहीं सौंपा गया।

१९ अप्रैल १९१० का दिन स्वतंत्रता के लिए भारतीयों के बलिदान की पुस्तक में एक और स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ गया जब देश की स्वतंत्रता के लिए कान्हेरे ने अपने दोनों साथियों के साथ हँसते हुए फांसी के फंदे को चूम लिया।

स्वतंत्र भारत का प्रत्येक व्यक्ति आज इन वीरों और महापुरुषों का ऋणी है जिन्होंने अपना सब कुछ छोड़ सम्पूर्ण जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया। भारत माता के ये महान् सपूत आज हम सब के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। इनकी जीवन गाथा हम सभी को इनके संघर्षों की बार-बार याद दिलाती है और प्रेरणा देती है।

अशोक आर्य
कार्यकारी अध्यक्ष
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

समाचार

आर्य समाज द्वारा बच्चों के आध्यात्मिक व आत्मिक विकास के लिए ऑनलाइन यज्ञ प्रतियोगिता का होगा आयोजन (विजेताओं को मिलेगा। पारितोषिक, 6 से 12 वर्ष तक के बच्चे ले सकेंगे भाग)

कोटा १३ जून २०२१, यज्ञ का जीवन में बहुत महत्व है, यज्ञ प्रतियोगिता से बालकों में यज्ञ करने की रुचि बढ़ेगी, छात्रों का यज्ञ के माध्यम से आध्यात्मिक एवं आत्मिक विकास होगा। कार्यक्रम संयोजक अर्जुन देव चड्ढा व अरविंद पाण्डेय ने सभी को इस प्रतियोगिता में भाग लेने का आह्वान किया व यज्ञ प्रतियोगियों (बालक-बालिकाओं) को शुभकामनाएँ दीं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने अहमदाबाद से ऑनलाइन यज्ञ प्रतियोगिता के डिजिटल प्लेटफार्म को लॉन्च करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्व पुरातन काल से चला आ रहा है, ऐसे में बच्चों में भी ये संस्कार पल्लवित हों ऐसा आर्य समाज का प्रयास है। आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कोटा के मीडिया प्रभारी आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि ६ से १२ वर्ष के बालक बालिकाओं को ३ मिनट यज्ञ करते हुए वीडियो के साथ नाम, पिता का नाम, जन्म दिनांक, कक्षा, विद्यालय, पता व मोबाइल नम्बर की जानकारी २५ जून २०२१ तक मोबाइल नम्बर ६७६६४६८४७७ पर भेजनी है। आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा के मंत्री अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि ऑनलाइन निशुल्क यज्ञ प्रतियोगिता का मूल्यांकन यज्ञ कुण्ड सज्जा, ड्रेस, विडियो की क्वालटी, घी व हवन सामग्री से आहुतियाँ व मंत्र पाठ के आधार पर होगा। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया जाएगा व प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया जाएगा तथा आचार्य स्तरीय निर्णायकों का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य की पुत्रवधू डॉ. प्रिया जी की दादी के निधन के शोक से अभी उभरे भी नहीं थे कि उनके दादा श्री माणक जी जैन (अग्रवाल) का भी दिनांक १५ मई २०२१ को हृदयाघात से निधन हो गया। इस अत्यन्त दु:खद समाचार से हम सब स्तब्ध व शोकमग्न हैं।

इस बार कोरोना ने परिवारों को जो दर्द दिया है वह अकल्पनीय है। अभी विधाता को कुछ और मंजूर था। प्रिया जी के ३२ वर्षीय चचेरे भाई के निधन ने परिवार को तोड़कर रख दिया।

वस्तुतः यह पूरा जैन परिवार ही जैसे आर्यजगत् का हिस्सा बन गया था। यज्ञादि कार्यक्रमों में भाग लेना, स्वयं के जीवन में स्थान देना आदि के अतिरिक्त सभी सदस्य न्यास तथा आर्यसमाज के कार्यक्रमों में सहभागिता से हम सबका अभिन्न अंग बन चुके थे अतः जैन परिवार के इस महान् दु:ख में उदयपुर के सभी आर्यजन स्वयं को सम्मिलित समझते हैं।

जहाँ तक दिवंगत श्री माणक जी के व्यक्तित्व का प्रश्न है तो वे एक धार्मिक, ईमानदार, मृदुभाषी एवं संपूर्ण परिवार को सुसंस्कारों से संपृक्त करने वाले जीवंतता से भरपूर पुरुष थे जिसका वर्णन शब्दों में शक्य नहीं है। ऐसे विभूति का अभाव विशेष रूप से जैन परिवार को खलता रहेगा।

ऐसी स्थिति में यही सोचकर धैर्य रखा जा सकता है कि विधाता के इस अटल विधान के समक्ष मनुष्य असहाय है, और यह भी कि प्रभु न्यायकारी और दयालु हैं, अतः उनकी व्यवस्था को धैर्यपूर्वक स्वीकार करने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं।

मैं न्यास तथा उदयपुर आर्यसमाज की ओर से जैन परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूँ, तथा परमपिता परमात्मा के श्रीचरणों में विनय करता हूँ कि शोकसंतप्त परिवार को वह शक्ति प्रदान करें कि वे इस अपार दु:ख को सहन कर सकें।

- भवानीदास आर्य, मन्त्री-न्यास

कोरोना योद्धाओं का हुआ सम्मान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से 'कोरोना पीड़ितों की सहायतार्थ सेवा शिविर' का आज रघुमल आर्य कन्या विद्यालय कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में कार्यकर्त्ता सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इस सेवा शिविर में सवा महीने तक प्रतिदिन १०००० निराश्रित मजदूरों, अस्पतालों के बाहर, रोगियों के परिजनों, सेवा बस्तियों में निःशुल्क सुबह-शाम भोजन उपलब्ध कराया गया।

कोरोना की दूसरी लहर में कमी आने पर महामारी के विरुद्ध जमकर संघर्ष करने वाले कर्मठ योद्धाओं को सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उत्तरी पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के सचिव सतीश चड्ढ़ा, आर्य नेता श्री सुरेश गुप्ता, सेवाश्रम संघ के मंत्री जोगिन्दर खट्टर ने प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने बताया कि जब कोरोना संक्रमण का बोलबाला था। पीड़ित रोगियों से उनके प्रियजन भी दूर हो गए, उन गंभीर परिस्थितियों में आर्य वीरों तथा समाज सेवियों ने उनके दु:ख दर्द को पहचाना और उन्हें ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर, कोविड टीकाकरण, भोजन तथा पानी जैसी बुनियादी सेवाओं के लिए हर प्रकार के अस्पतालों में सहयोग किया। कोरोना मृतकों के परिजन जिन्हें लावारिस छोड़ गए, उनका अंतिम संस्कार भी करने में मदद की। इस अवसर पर देश के अन्य राज्यों में भी ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर बैंक की स्थापना की गई। जिससे जरूरतमन्द मरीजों को ऑक्सीजन व चिकित्सा सुविधाओं के लिए अभियान प्रारम्भ हुआ ताकि इस भयानक महामारी पर अंकुश लगाया जा सके।

- चन्द्रमोहन आर्य, प्रेस सचिव

हलचल

'कमर दर्द, सरवाइकल और चारपाई'

सोने के लिए खाट हमारे पूर्वजों की सर्वोत्तम खोज है। हमारे पूर्वज क्या लकड़ी को चीरना नहीं जानते थे? वे भी लकड़ी चीरकर उसकी पट्टियाँ बनाकर डबल बेड बना सकते थे। डबल बेड बनाना कोई रॉकेट सायन्स नहीं है। लकड़ी की पट्टियों में कीलें ही ठोंकनी होती हैं। चारपाई भी भले कोई सायन्स नहीं है, लेकिन एक समझदारी है कि कैसे शरीर को अधिक आराम मिल सके। चारपाई बनाना एक कला है। उसे रस्सी से बुनना पड़ता है और उसमें दिमाग और श्रम लगता है।

जब हम सोते हैं, तब सिर और पांव के मुकाबले पेट को अधिक खून की जरूरत होती है, क्योंकि रात हो या दोपहर, लोग अक्सर खाने के बाद ही सोते हैं। पेट को पाचन क्रिया के लिए अधिक खून की जरूरत होती है। इसलिए सोते समय चारपाई की जोली ही इस स्वास्थ्य का लाभ पहुँचा सकती है।

दुनिया में जितनी भी आरामकुर्सियाँ देख लें, सभी में चारपाई की तरह जोली बनाई जाती है। बच्चों का पुराना पालना सिर्फ कपड़े की जोली का था, लकड़ी का सपाट बनाकर उसे भी बिगाड़ दिया गया है। चारपाई पर सोने से कमर और पीठ में दर्द कभी नही होता है। दर्द होने पर चारपाई पर सोने की सलाह दी जाती है।

अगर किसी को डॉक्टर Bed Rest लिख देता है तो दो तीन दिन में उसको English Bed पर लेटने से Bed Soar शुरू हो जाता है। भारतीय चारपाई ऐसे मरीजों के बहुत काम की होती है। चारपाई पर Bed Soar नहीं होता क्योंकि इसमें से हवा आर-पार होती रहती है।

गर्मियों में इंग्लिश Bed गर्म हो जाता है इसलिए AC की अधिक जरुरत पड़ती है जबकि सनातन चारपाई पर नीचे से हवा लगने के कारण गर्मी बहुत कम लगती है ।

बान की चारपाई पर सोने से सारी रात Automatically सारे शरीर का Acupressure होता रहता है।

गर्मी में छत पर चारपाई डालकर सोने का आनन्द ही और है। ताजी हवा, बदलता मौसम, तारों की छाँव ,चन्द्रमा की शीतलता जीवन में उमंग भर देती है। हर घर में एक स्वदेशी बाण की बुनी हुई (प्लास्टिक की नहीं) चारपाई होनी चाहिए।

अब सस्ते प्लास्टिक की रस्सी और पट्टी आ गयी है, लेकिन वह सही नहीं है। स्वदेशी चारपाई के बदले हजारों रुपये की दवा और डॉक्टर का खर्च बचाया जा सकता है। अगर दाब या कांस की बुनी हुए तो सर्वोत्तम होती है।

सम्पूर्ण नवलखा महल परिसर वाई-फाई युक्त

आज का युग तकनीक का युग है। नवलखा महल परिसर क्योंकि गुलाब बाग के अन्दर स्थित है अतः यहाँ अच्छी स्पीड का वाई-फाई सम्भव नहीं हो पा रहा था और जो था वह भी केवल कार्यालय तक सीमित था।

आयावर्त्त चित्रदीर्घा दिग्दर्शन हेतु गाईड महोदय अगर उपस्थित न हों तो उसके लिए एक योजना बनाई थी। दर्शक को केवल एक कोड स्केन करना करना था उसके बाद उसे वह लिंक प्राप्त हो जाता जिससे वह सम्पूर्ण दीर्घा का विवरण अपने मोबाईल से सुनकर दीर्घा को समझ सकता था। परन्तु हाई स्पीड इण्टरनेट के अभाव में यह सम्भव नहीं हो पा रहा था। अब पूरे परिसर में 'राउटर' लगाकर इण्टरनेट युक्त कर दिया गया है। परिणामस्वरूप आर्यावर्त्त दीर्घा के दर्शक जहाँ उपरोक्त वर्णित लाभ ले सकेंगे, वहीं नवनिर्मित 'सुरेश चन्द्र दीनदयाल आर्य चल चित्रालय' (थियेटर) में भी दर्शकों को उचित ऑन लाईन सामग्री दिखाई जा सकेगी। साथ ही निर्माणाधीन भव्य संस्कार वीथिका में भी इण्टरनेट के सहारे दर्शकों को १६ संस्कारों की व्याख्या सुरुचिपूर्ण तरीके से सुनवा पाना सम्भव हो सकेगा।

आर्य नेता श्री रासा सिंह जी का निधन

कोरोना की द्वितीय लहर ने आर्य जगत् को बहुत आघात दिए हैं। हमारे अनेक उपदेशक, भजनोपदेशक और आर्य नेता हमसे सदा-सदा के लिए बिछुड़ गए। अजमेर से ५ बार लगातार सांसद रहने वाले लोकप्रिय जननेता और साथ ही ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त हमारे अग्रज आदरणीय रासा सिंह जी रावत को भी क्रूर काल के हाथों ने हमसे छीन लिया। रासा सिंह जी आर्य समाज अजमेर के प्रधान थे। वे हमारे प्रति विशेष स्नेह रखते थे, न्यास के कार्यों को लेकर उनमें भारी उत्साह था और वे यदा-कदा हमें प्रेरणा व सुझाव देते रहते थे। भ्राता रासा सिंह जी सशक्त वक्ता थे, जब मंच पर वे ऋषि दयानन्द जी महाराज का गुणगान करते थे तो श्रोताओं में अति उत्साह का संचार हो जाता था। उनके निर्देशन में आर्य जगत् अपने कार्य को आगे बढ़ा रहा था। उनका यों बिछुड़ जाना केवल रावत परिवार के निकट ही दुःख का विषय नहीं है वरन् सम्पूर्ण आर्यजगत् की हानि है। परन्तु इस मामले में हम सभी विवश हैं और विधाता की व्यवस्था के सामने नतमस्तक होने के अतिरिक्त हमारे पास अन्य कोई चारा नहीं है। परमपिता परमात्मा के चरणों में निवेदन है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और शोक संतप्त परिवार को वह शक्ति और भक्ति प्रदान करें जिससे वह इस दुःख को सहन कर सकें।

- अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०२/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री हर्षवर्धन आर्य, (बिहार), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०३/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०३/२१

श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; बिहार, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरि.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 20 पर अवश्य पढ़ें।

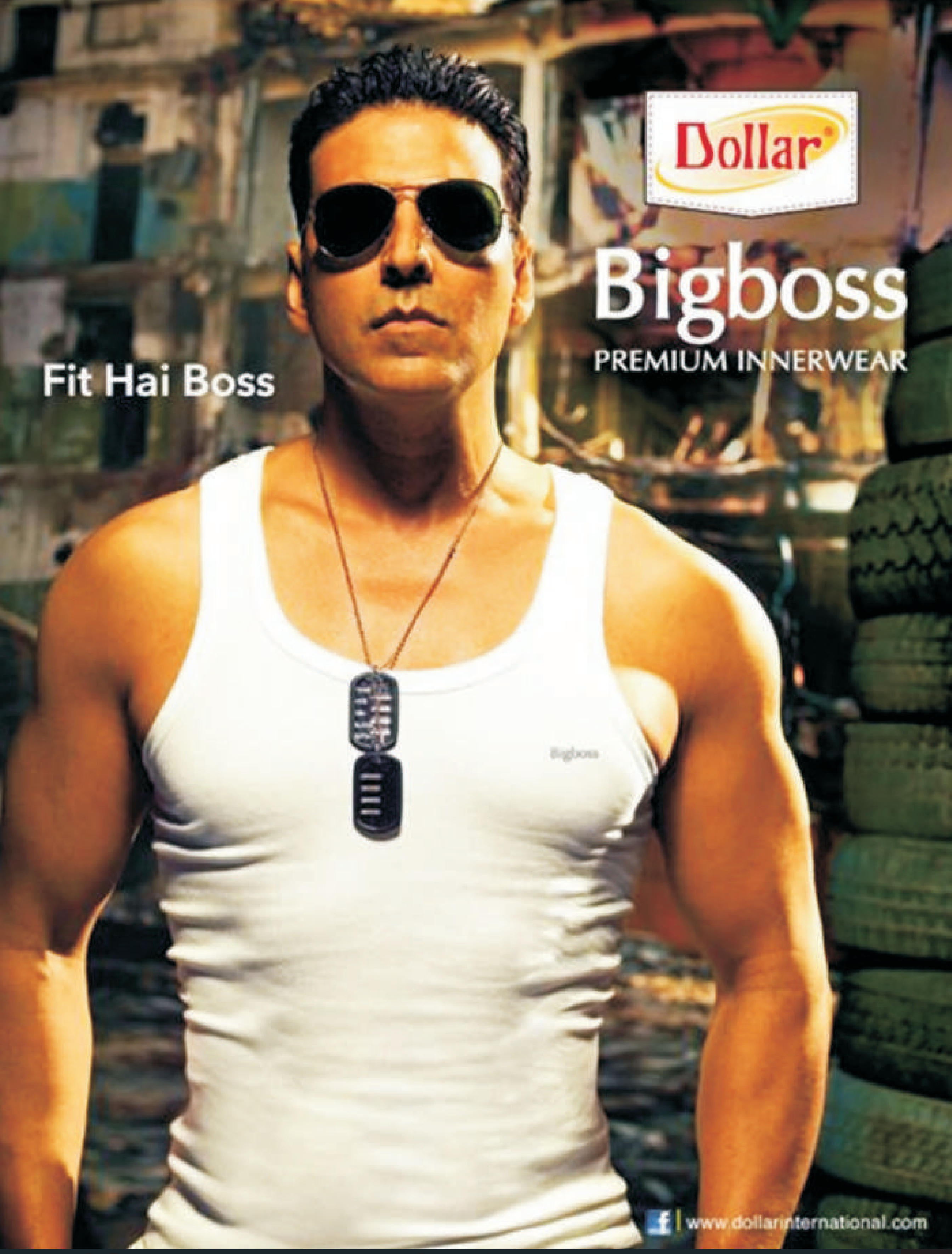
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 June+July-2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

अधिक वर्षों के बीतने, श्वेत बाल के होने, अधिक धन से और बड़े कुटुम्ब के होने से वृद्ध नहीं होता। किन्तु ऋषि महात्माओं का यही निश्चय है कि जो हमारे बीच में विद्या-विज्ञान में अधिक है, वही वृद्ध पुरुष कहाता है।।

- सत्यार्थ प्रकाश, दशम समुल्लास पृष्ठ २६०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर